लेखा संगम

चौदहवां अंक - 2020

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम एवं द्वितीय
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

नराकास इलाहाबाद द्वारा राजभाषा गौरव सम्मान प्राप्त करती हुई एवं
नराकास बैठक को सम्बोधित करती हुई महालेखाकार-प्रथम महोदया

लोक हितार्थ सत्यनिष्ठा

हिन्दी पत्रिका

लेखा संगम

चौदहवां अंक - 2020

जुलाई 2019 से दिसम्बर 2019

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम एवं द्वितीय
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

लेखा संगम परिवार

संरक्षक

(1) सुश्री एस.आह्लादिनि पंडा
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) प्रथम
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

(2) सुश्री मोनिका वर्मा
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) द्वितीय
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

परामर्शदाता

श्री पंकज वर्मा
उपमहालेखाकार/प्रशासन
(लेखा एवं हकदारी) प्रथम

श्री कुमार चन्द्रेश
उपमहालेखाकार/प्रशासन
(लेखा एवं हकदारी) द्वितीय

सम्पादक

श्री राजन प्रसाद
वरिष्ठ लेखाधिकारी
(लेखा एवं हकदारी) प्रथम

सह-सम्पादक

श्री सुधीर कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखाधिकारी
(लेखा एवं हकदारी) प्रथम

श्री देवमणि मिश्र
वरिष्ठ लेखाधिकारी
(लेखा एवं हकदारी) द्वितीय

सहायक सम्पादक

श्री अजय कुमार
सहायक लेखाधिकारी/हिन्दी
(लेखा एवं हकदारी) प्रथम

श्री अतुल कुमार राय
सहायक लेखाधिकारी/हिन्दी
(लेखा एवं हकदारी) द्वितीय

सहयोग

श्री अमीन अली
कनिष्ठ अनुवादक

मूल्य : निःशुल्क (राजभाषा हिन्दी को समर्पित)।

(नोट : लेखकीय विचारो से सम्पादकीय सहमति आवश्यक नहीं है)।

मुख पृष्ठ : नैनी ब्रिज, इलाहाबाद।

क्र०सं०	रचना का नाम	रचनाकार श्री/सुश्री	पृष्ठ संख्या
1.	गायब है इन्टरनेट की चिड़िया	यश मालवीय	9
2.	सत्यनिष्ठा वचन	जोखू लाल	11
3.	नहर कोठी	शशांक त्रिवेदी	14
4.	गौ-मुख–रोमांचक यात्रा संस्मरण	अनूप कुमार टण्डन	19
5.	कुम्भ में संत ज्ञान	प्रेमपाल शर्मा	24
6.	दक्षिण भारत की यात्रा-वृत्तांत	डॉ०नित्यनाथ पाण्डेय	27
7.	बेटी बचाओ-बेटी बचाओ	आकृति कुशवाहा पुत्री अनूप कुमार	31
8.	बुजुर्गों का सम्मान-सुख की कुंजी	सतीश राय	33
9.	प्रकृति की धरोहर पर्यावरण	एस०बी०सिंह	37
10.	सफलता के सही मायने	मनीष कुमार विश्वकर्मा	40
11.	ईश्वर की शक्तियाँ	भूपेंद्र सिंह नेगी	41
12.	ग़ज़ल	सगीर अहमद सिद्दीकी	45
13.	मातृशक्ति की पुकार	रवीन्द्र कुमार शर्मा	47
14.	बारिश की बूंदे	देवमणि मिश्रा	48
15.	माँ	अरुण कुमार श्रीवास्तव	50
16.	टूटकर बिखरो नहीं	अजय वर्मा	51
17.	चित्र	पुष्पा मिश्रा	52
18.	बेटियाँ	शिवम कुमार	53
19.	शहीद चन्द्रशेखर आजाद पार्क एवं संगम	राजेंद्र कुमार श्रीवास्तव	54
20.	बहादुरशाह ज़फर(भाग-1)	राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल	56
21.	अबला	स्मृति श्रीवास्तव	58
22.	परमात्मा की रचना	आनंद कुमार जैन	60
23.	ग़ज़ल	राजीव सिंह	62

पाठकों के पत्र

महोदय,

आपके कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "लेखा संगम" के 12वें अंक की प्राप्ति हुई, एतदर्थ आभार।

पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक एवं मनमोहक है। यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के विकास की दिशा में किया गया एक सफल प्रयास है। पत्रिका की प्रत्येक रचना रोचक, ज्ञानवर्धक एवं सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है। वैसे तो सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं पर विशेष रूप से लेखों में श्री अनूप कुमार टंडन का "**नारी अस्तित्व**" जिसमें एक स्त्री के जन्म से मृत्यु तक के सफर में आने वाली कठिनाइयों का यथार्थ वर्णन करता है। श्री थंकाचन एम०डी० का लेख "**अच्छा पड़ोसी**" एक अच्छा इंसान बन असहायों की मदद करने को प्रेरित करता है। श्री सतीश राय का लेख "**अनजाने कर्म का फल**" बताता है कि अपने आस-पास सकारात्मकता रखने से जिंदगी कितनी आसान हो जाती है। श्री यश मालवीय का संस्मरण विशेष उल्लेखनीय है।

कविताओं में श्री प्रत्युष अवस्थी जी की "**हो मंगलाचरण**", अजय वर्मा जी की "**वो बचपन की यादें**", राजेंद्र प्रसाद शुक्ल जी की "**कहाँ गए वो दिन?**", विशेष रूप से प्रशंसनीय है। कहानियों में शशांक त्रिवेदी जी की "**लखनवी इश्क़**" एवं श्री विकास जयसवाल की "**हँसता बूढ़ा**" रोचक एवं अर्थपूर्ण है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(चन्दन कुमार बढ़ई)
हिन्दी अधिकारी/प्रशा० हिन्दी सेल
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

महोदय/महोदया,

हिन्दी पत्रिका "लेखा संगम" के 12वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सम्पूर्ण रचनाएँ ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी लगी। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा के उन्नयन हेतु विभाग का यह कार्य स्तुत्य एवं सराहनीय है। पत्रिका का कलेवर एवं पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के अंदर समाचार पत्रों की झलकियाँ अत्यंत सराहनीय है।

पत्रिका के सफल सम्पादन, रचनाओं के चयन, संकलन एवं प्रकाशन हेतु संपादक तथा संपादकीय परिवार के सभी सदस्यों को बधाई और पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सा०व सा०क्षे०ले०प०)
कर्नाटक, बैंगलुरु

पाठकों के पत्र

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के पत्रांक- हि०अ०/लेखा संगम/ द्वादश अंक/२०१८/१६४११ दिनांक २२.०५.२०१९ द्वारा हिन्दी पत्रिका "लेखा संगम" के 12वें अंक की एक प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

अंक पठनीय एवं उत्कृष्ठ है। पत्रिका का स्वरूप लुभावना है। उसका बाहरी रंग-रूप ही नहीं, आंतरिक सौन्दर्य भी आकर्षित करता है। श्री अनूप कुमार टंडन का लेख 'नारी अस्तित्व', श्री भूपेंद्र सिंह नेगी की रचना 'ईश्वर मेरी नजर से', श्री रवीद्र कुमार शर्मा की कविता 'नेता बना दो' आदि काफी रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मण्डल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिन्दी कक्ष
कार्यालय महालेखाकार (ले० एवं ह०)
बिहार, पटना

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई हिन्दी पत्रिका "**लेखा संगम**" का द्वादश वां अंक हमारे कार्यालय को प्राप्त हुआ है। आपके कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रशंसनीय लेख एवं सुंदर कविताएं लिखने का सराहनीय प्रयास किया है।

श्री थंकाचन एम०डी० द्वारा लिखित "**अच्छा पड़ोसी**", श्री सतीश राय द्वारा लिखित "**अनजाने कर्म का फल**", सुश्री प्रीति सिंह द्वारा लिखित "**कुम्भ मेला**", श्री राजेंद्र प्रसाद शुक्ल द्वारा लिखित "**कहाँ गए वो दिन ?**", और श्री राजेंद्र कुमार खरे द्वारा लिखित "**सुखी जीवन का रहस्य**" सराहनीय है। पश्च पृष्ठ पर छपी हुई कुम्भ मेले की तस्वीर इलाहाबाद की झांकी करवाती है।

हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका "लेखा संगम" के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारी शुभकामनाएँ।

धन्यवाद।

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आ० एवं रा०क्षे०ले०प०),
गुजरात, अहमदाबाद

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय द्वारा हिन्दी गृह पत्रिका “ लेखा संगम ” के चौदहवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ यह पत्रिका कार्यालय में साहित्यिक तथा रचनात्मक प्रतिभा के विकास का एक सशक्त माध्यम बन गई है।

भारतवर्ष एक बहु-भाषी देश है परंतु इसकी संस्कृति, सभ्यता हिन्दी भाषा में ही बसती है। हिन्दी राजभाषा ही नहीं अपितु आपसी प्रेम, सौहार्द एवं मेल-जोल की भाषा भी है। अपनी भाषा के प्रति प्रेम हमारे राष्ट्र-प्रेम को और भी मजबूत बनाता है। अपनी भाषा में मौलिक लेखन से अभिव्यक्ति सरल, सहज एवं स्वाभाविक होती है। यह पत्रिका कार्यालयीन व्यस्तताओं के मध्य मानवीय संवेदनशीलता एवं सामाजिक अनुभूतियों का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करती है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, इलाहाबाद द्वारा कार्यालय को राजभाषा गौरव पुरस्कार प्राप्त होने के अवसर पर मैं कार्यालय के समस्त राजभाषा प्रेमियों का हार्दिक अभिनंदन करती हूँ।

एस. ए. पंडा

(एस० आह्लादिनि पंडा)
महालेखाकार
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम,
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

संदेश

हिन्दी प्रचार एवं प्रसार के गौरव पथ पर अग्रसर होते हुए " लेखा संगम " अपने चौदहवें अंक में प्रवेश कर चुकी है, इसके लिए आप सबको बहुत-बहुत बधाई देती हूँ। किसी देश की भाषा उसके स्वतंत्र, सक्षम एवं समृद्ध होने की पहचान है। पत्रिका ने राजभाषा हिन्दी के प्रति निष्ठा की भावना मजबूत कर हिन्दी को समृद्ध बनाया है। हिन्दी के प्रति निष्ठा का परिणाम ही है कि हिन्दी में किये जाने वाले कार्यालय के नियमित कार्य का प्रतिशत अपने शिखर पर है तथा नियमित व्यस्तताओं से परे रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से " लेखा संगम" में रचनात्मकता के नये आयाम प्रस्तुत किये हैं।

यूं तो पत्रिका विविधता से परिपूर्ण है परन्तु हास्य रचनाओं का समावेश पत्रिका को अधिक रुचिकर स्वरूप प्रदान करेगा। आशा करती हूँ कि पत्रिका के आगामी अंक में हास्य रचनाकार भी अन्य विधा के रचनाकारों की भांति अपना योगदान देकर पत्रिका को अधिक समृद्ध बनायेगें।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(मोनिका वर्मा)
महालेखाकार
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय,
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

संपादक की कलम से.....

प्रिय पाठकों.....

लेखा संगम पत्रिका का चौदहवाँ अंक आप प्रबुद्ध पाठकों के कर कमलों में अर्पित करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एक और सराहनीय प्रयास है। हमारी पत्रिका ने राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में जो रचनात्मक एवं सकारात्मक भूमिका निभाई है वह प्रशंसनीय है एवं इसके लिए मै पत्रिका से संबन्धित समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

हिन्दी न केवल भारत बल्कि विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है। इसकी सहजता, सरलता एवं वैज्ञानिकता ही इसे अन्य भाषाओं से अलग करती है। बस आवश्यकता है, इसे और तेज गति देने की। वास्तव में बस थोड़ी सी निष्ठा एवं सार्थक प्रयास से हम हिन्दी को शिखर पर पहुंचा सकते हैं।

मैं आभार व्यक्त करता हूँ उन सभी रचनाकारों के प्रति जिन्होने अपने रचनात्मकता की एक झांकी, अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है। कार्यालय में राजभाषा हिन्दी की विकास यात्रा में ''लेखा संगम'' का एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपनी सक्रिय भूमिका अदा करती रहेगी।

पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास के लिए अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत कराएं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(राजन प्रसाद)
वरिष्ठ लेखाधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम,
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद।

गद्य संगम

सामयिक
गायब है इंटरनेट की चिड़िया

यश मालवीय

लगभग डेढ़ दिन यानी 36 घंटे बिना इंटरनेट के बीत चुके हैं। पल–पल भारी गुजर रहा है। नेट के सक्रिय होने के बाद पहली बार ऐसा हुआ है जब इलाहाबाद इस प्रकार की छटपटाहट अनुभव कर रहा है। अपना शहर ही बेगाना हो गया सा लगता है। मशहूर बुजुर्ग आलोचक वकील साहब खामोशी से चले गए कुछ पता ही नही चला। इंटरनेट की चिड़िया फुर्र हो गई है। समझ ही नहीं आ रहा है कि नेट किस खेत की मूली थी। खेत है न मूली, बस सामने लाल आंखों से देखता इंटरनेट का मॉडम मुंह चिढ़ा रहा है। सारे कारोबार ठप हैं यहां तक कि गुलशन का कारोबार भी। फैज साहब याद आ रहे हैं–

न गुल खुले न उनसे मिले न मय पी है
अजीब रंग में अबके बहार गुजरी है।

नेट के बिना सर्दी का प्रकोप भी कुछ और ही अधिक लग रहा है। गूंगे बहरे और अंधे होने का बोध हो रहा है। ले– देकर एक अखबार का ही सहारा है चैनल भी अपना–अपना राग अलाप रहे हैं। मोहब्बतों के कार्य व्यापार पर भी ग्रहण लग गया है। फेसबुक बे चेहरा हो गयी है। व्हाट्सएप चकरघिन्नी है। मोबाइल का स्क्रीन सादा है, सादे कागज की तरह। मैसेज कहीं हवाओं में फंसे हुए हैं। उंगलियां नृत्य करना भूल गई हैं। समर्थन और विरोध की आंधी में आम आदमी की नन्हीं–नन्हीं आकांक्षाएँ तिनके की तरह इधर–उधर हो गई है।

मेरी पोती चिया की तीसरी वर्षगांठ आ रही है। रोज वीडियो चैट पर उससे मीठी–मीठी तुतली तुतली बातें हो रही थीं। ये 3 साल इलाहाबाद और दिल्ली एक कर दिये थे इस इंटरनेट के जादू ने। दिन में तीन–तीन, चार–चार बार देखते थे चिया की मोहिनी सूरत। पिछले 2 दिन से राजनेताओं को गरिया रहे हैं। किसी बड़े संविधान की बात क्या करें आदमी का अपना संविधान ही ध्वस्त हो गया है।

गोपालरंजन का एक शेर याद आ रहा है–

बनबन के कट रहा है अनुच्छेद की तरह।
हर आदमी का अपना अलग संविधान है।।

ट्वीटर की टिपटिपाहट शांत है। रोज कुआं खोदने और पानी पीने वाले तबाह हैं। जो तन्हाई इंटरनेट के सहारे कट जाती थी आज खाने को दौड़ रही है। जनजीवन अस्त–व्यस्त है। यूट्यूब सिर पीट रहा है। सर्वर डाउन है या कहिए ह्दयगति की तरह रुका हुआ है। दिहाड़ी मजदूर ही नहीं हम सब बेरोजगारी के आलम में हैं। टेंपो और बैटरी रिक्शे सवारी के इंतजार में मुंह बाए खड़े हैं या फिर खाली–खाली सड़कों पर दौड़ रहे हैं। पूरा शहर ही हैंग हो गया है। नागरिकता बिल के चक्कर में हर आदमी कुएं का मेंढक हो गया है। प्रशासन बार–बार फुसला रहा है कि स्थितियां सामान्य होते ही इंटरनेट सेवाएं बहाल की जाएंगी जबकि आम आदमी की स्थिति ही डावाँडोल है। वह स्वजनों से, अपनों से कट गया है। लैपटॉप उदास है, संवाद के तार टूट गए हैं।

सब अपनी अपनी डाल पर इंटरनेट की चिड़िया का इंतजार कर रहे हैं, आंखों की चमक में धुंध का बसेरा हो गया है। देखिए कब तक लौटता है इंटरनेट का पाखी।

बड़े बाबू का एम्स में इलाज चल रहा था। डॉक्टर से डिस्कस कर बेटे को नया 'प्रिस्क्रिप्शन' भेजना था। पापा की सांसे अटकी हुई हैं ऊपर–नीचे हो रही हैं। जब तक नेट नहीं आता, उनकी दवाओं का आखिर क्या हो? बेटा अलग परेशान, परिवार अलग। नई ब्याही बहुरिया का पति परदेश में है। नेट के माध्यम से ही देखा देखी हो पाती थी, अब सब कुछ स्थगित है। एक दोहा आकार ले रहा है–

बिरहन की सांसो फँसी, इण्टरनेट की सांस
रह–रह चुभती जिंदगी, कौन निकाले फाँस।।

दिन पहाड़ हो गया है। नेट के बिना जिंदगी ही राम का वनवास हो गई लग रही है। 'अंगना तो परवत भया, देहरी भयी विदेश' वाली स्थिति है। मन बहुत आशंकित हो रहा है। 'अभी तो इब्तदाए इश्क है रोता है क्या, आगे–आगे देखिए होता है क्या' वाला ही भाव जग रहा है। चाहे कुछ हो मगर नेट आ जाए तो फिर से रुकी हुई बहार के लौट आने की पूरी उम्मीद है।

सत्यनिष्ठा वचन

जोखू लाल

हमारे धर्म शास्त्रों और ग्रन्थों में जगह–जगह आपसी भाई–चारे व प्रेम की बात कही गयी है। परन्तु अफसोस है कि हमने अपने सुन्दर मन मन्दिर को अनेकों बुराइयों से भर दिया है। जहाँ हमारे मन और विचारों में अच्छाइयों का वास होना चाहिए वहीं आज उसी में बेशुमार बुराइयों का बसेरा है। मन वचन से होते हुए भी कर्म में अशुभ वृत्तियाँ घर कर बैठी हैं। हमें अच्छाई की जगह बुराई ज्यादा सम्मोहित कर रही हैं। हम जानते हुए भी इस बात को अनदेखा कर रहे हैं कि बुराई हमें पतन और पीड़ा की तरफ ले जा रही है। यदि हमारे हृदय में ज्वालामुखी जल रही है तो आप कैसे आशा करोगे कि हमारे हाथ में सफलता के फूल खिलेंगे। आज मानव अहंकार का रुप लेता जा रहा है । अहंकार तो ऐसा शत्रु है, जो न तुम्हें जीने देगा और न मरने पर ही छोड़ेगा। यह तो ज्ञान, प्रेम और ऐश्वर्य का दुश्मन होता है । जिसका अहंकार जितना बड़ा होगा, उसका व्यक्तित्व उतना ही घटिया होगा, यह हीनता के कारण होता है । दूसरे को नीचा दिखाने का ख्याल हीन में ज्यादा पाया जाता है । किसी की निन्दा करने वाले को कभी सम्मान नहीं मिलता, जो दूसरे की इज्जत नहीं करते उसे इज्जत नहीं मिलती और जो दूसरे के घर में आग लगाने वाले होते हैं उनके घर पहले स्वयं उजड़ जाते हैं । अन्धा वह नहीं होता जो देख नहीं सकता, अन्धा वह होता है जो देखकर अपने दोषों पर परदा डालने का प्रयास करता है। अपनी भूल स्वीकार करने में जो गौरव है वह अन्याय का चिराग जलाने में नहीं। जो अन्याय के सामने छाती खोलकर खड़ा हो जाए वही सच्चा पीर है, वही महान होता है । महानता के फूल में नम्रता की खुशबू पायी जाती है।

यह संसार संघर्ष भूमि है, इससे भागना कायरता है। अनायास बैठना नपुंसकता है। सतत् संघर्ष करना ही जीवन और पौरूष है, बस अपने प्रयत्नों में सन्तोष होना चाहिए। निष्फल और

असम्भव शब्द केवल मूर्खों के कोष में पाये जाते हैं जो लोग यह समझते हैं कि सब भाग्य के अधीन है, वह कुबुद्धि लोग हैं। भाग्य क्या है ? भाग्य भूत काल में किये गये कर्म हैं । कर्म से भाग्य को पलटा जा सकता है । अर्थात भाग्य का पिता कर्म है और आप कर्म के अस्तित्व जन्म कर्म का आरम्भ है। जीवन ही कर्म है। मृत्यु कर्म का अन्त है और मृत्यु का अन्त मोक्ष है। मोक्ष का जीवन धर्म है । धर्म कोई इतिहास या भूगोल की पुस्तक नहीं है कि पास करके डिग्री हासिल की जा सके।

धर्म की कोई शिक्षा नहीं होती, धर्म की साधना होती है धर्म अनुभव करना होता है । धर्म आत्मा का विज्ञान है, धर्म करने से आत्मा में पोषण बल प्राप्त होता है। कर्म से जीवन आरम्भ होता है, धर्म पर समाप्त होता है। इसलिए धर्म जीवन का शिखर है। नास्तिक ही पाप है। शेष सभी पाप नास्तिक के पीछे चलते हैं। धार्मिक व्यक्ति जीवन से भागने वाले नही होते, जीवन से कायर भागते हैं। कायर कभी धार्मिक नहीं होते । आत्मा में बल तभी प्राप्त होगा जब माली सुन्दर होगा, तभी सुन्दर फूल खिलेंगे । अर्थात भावना धर्म का माली है, विश्वास धर्म का बीज है । भक्ति धर्म की जड़ है । मानव ने अनेकों बुराइयों से मनोवृत्त को दूषित कर दिया है । हम दस रुपये से अपना ईमान, धर्मसच्चाई सब बेच देते हैं । आज मानव बड़े–बड़े ईमान को बेच कर छोटी–छोटी जरूरतों को पूरी कर रहा है। क्योंकि अपने भीतर को हमें पता ही नहीं है कि जिसे हम बेच रहे हैं वह कितना मूल्यवान है। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए, न बुरा सोचें न बुरे को ध्यान दें क्योंकि बुराई का फल सदैव बुरा होता है, बुराई का जन्म मन से होता है। अतः जो स्वयं को बुरा लगे वही दूसरों को लिए न सोचें। जीवन में बेहतर यही होगा कि हम बुरी बातों को दरकिनार कर कुछ ऐसा सोचें और करें कि जीवन सफल और व्यवस्थित हो सके।

जीवन में विचारों को महत्व दें क्योंकि वो आपके विचार ही हैं जो आपको जीवन की ऊँचाई और अच्छे लक्ष्य की ओर ले जाते हैं । वहीं विचार गलत होने पर बुराइयों की गर्त में डाल देते हैं। बुराई अकेले नहीं आती यह अपने साथ पूरा परिवार लेकर आती है। जैसे झूठ–झूठ के साथ, चोरी चोर के साथ, हिंसा हिंसा के साथ, लड़ाई फिर अमानवीय दुर्गुण प्रकट होने लगते हैं । बुराई से बचने के लिए मन और चित्त को निर्मल रखें वाणी में मधुरता लायें। सच्चाई और अच्छाई का सहारा लेते हुए जीवन पथ पर अग्रसर अच्छे लोगों का साथ करें और जीवन में भलाई का मार्ग, आपकी अच्छाई आपको स्वतः लोगों का प्यारा बना देगी।

आज मानव, मानवता को भुलाकर अज्ञानता का चादर ओढ़कर गहरी नींद में सो रहा है, उसे न तो अपनी मंजिल का एहसास है और न ही मार्ग का पता। माया के नशे में चूर मनुष्य लालच का पुतला बन कर रह गया है । उस आनन्द स्वरूप परमात्मा का अंश होने पर भी सुख प्राप्ति के लिए भटक रहा है । ऐसी विषम परिस्थितियों से निकलने के लिए शिक्षा की नहीं, दीक्षा की आवश्यकता होती है । जो किसी पूर्ण सद्गुरु के शरण में ही प्राप्त हो सकती है।

!! नहर कोठी !!

शशांक त्रिवेदी

गर्मियों की एक उमस भरी शाम थी। आम के पेड़ के नीचे बिछी चटाई पर मैं अपने भाइयों और दोस्तों के साथ बैठा ताश खेल रहा था। लगभग दो महीने बाद मुझे छुट्टी मिली थी जिसका एक भी लम्हा मैं व्यर्थ जाया नहीं करना चाहता था। पड़ोस में गन्ने का रस निकालने वाला कोल्हू लगा हुआ था। गन्ने का खेत भी पास में ही था। कुछ उत्साही छोटे लड़के गन्ने तोड़ लाए फिर ताश का दौर खत्म हुआ तो कोल्हू पर आक्रमण किया गया और एक बाल्टी भर गन्ने का रस निकाला गया। गन्ने का रस मट्ठे या दही के साथ दोगुना आनंद देता है सो हमने भी उसी तरह से उसका लुत्फ लिया। घड़ी में देखा तो शाम के 5 बज रहे थे। गाँव के पश्चिमी छोर की तरफ विंध्य पर्वत चोटियों की एक लंबी श्रृंखला गुजरती है अर्थात यदि आप पश्चिम दिशा की तरफ बढ़ें तो कुछ ही किलोमीटर बाद पहाड़ शुरू हो जाएंगे। गाँव से सटी हुई एक नहर भी है जो पिछले करीब दो दशकों से सूखी पड़ी हुई है। सूर्य की तीव्र रश्मियाँ अब थोड़ी मंद पड़ रही थीं, कुछ ही घण्टे का दिन शेष था।

एक दोस्त ने सुझाव दिया कि आज कहीं बाहर घूमने चला जाए। कुछ देर विमर्श के बाद मैंने प्रस्ताव रखा कि आज वो नहर वाली कोठी देखने चलते हैं। इस पर सब एक दूसरे का मुंह ताकने लगे। मैं थोड़ा हैरान हुआ और पूछने लगा कि इसमें इतना सोचने की क्या बात है। मुझे वैसे भी पुरानी जगहें घूमने का शौक है तो इसी बहाने अपने गाँव के पड़ोस का कुछ भ्रमण भी हो जाएगा। मेरे भाई ने मुझे बताया कि उस कोठी में आत्मा रहती है और सूरज डूबने के बाद वहाँ जाना तो दूर उसके पड़ोस से भी निकलना वर्जित है। मैंने भी इस बारे में सुन रखा था लेकिन मैं इन पैरानॉर्मल चीजों, भूत–प्रेत इत्यादि पर विश्वास नहीं करता था। मैंने हंसते हुए उन्हें बताया कि इंसान मंगल ग्रह पर कदम रख

चुका है, संविधान में धारा 497 और 377 जैसे कानून आ गए हैं और तुम लोग हो कि अभी भी आत्मा और भूत–प्रेत के चक्कर में पड़े हो। मेरे काफी जोर देने पर तीन लोग राजी हुए। हमने घर से साइकिल निकाली और ये बताकर कि हम पहाड़ों की तरफ जा रहे हैं, निकल पड़े। मैं, मेरे दोस्त बंटी,सोनू और तेजप्रताप जिसे हम सब टार्जन कहते थे, दो साइकिलों पर बैठकर निकल पड़े।

दिनकर पहाड़ों के पीछे जा चुके थे और उनकी लालिमा फैल रही थी जिससे यह प्रतीति होती थी कि अभी घण्टे भर पर्याप्त उजाला रहेगा। थोड़ी ही देर में हम उस नहर कोठी के सामने थे। इसका निर्माण लार्ड कर्जन के कार्यकाल में सम्भवतः 1903 में कराया गया जिसमें सिंचाई विभाग के अंग्रेज अफसर रहते थे। गाँव के कुछ अत्यंत बुजुर्ग लोग बताते हैं कि गोरे लोग घोड़े पर बैठकर आते थे और सिंचाई के एवज में फसल का एक अच्छा खासा हिस्सा ले जाते थे। वे अत्यंत क्रूर थे और निर्ममता से लोगों को पीटते थे। एक दिन उस नहर कोठी में आग लग गई, एक अंग्रेज अफसर अपनी बीवी और दो बच्चों सहित उसमें जलकर मर गया। फिर कोठी का पुनर्निर्माण कराया गया और एक दूसरा अफसर वहाँ रहने आया। कुछ दिन बाद उसका शव कोठी से बाहर एक बरगद के पेड़ पर लटकता पाया गया। पता नहीं उसने आत्महत्या की थी या फिर... दोबारा उस कोठी में रहने की
जहमत कोई नहीं उठा सका। जिसने भी कोशिश की या तो वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठा या संदिग्ध हालातों में उसकी मौत हो गई। कोठी बंद कर दी गई। उसके चारो ओर लोहे की मजबूत जालियों की चहारदीवारी उठा दी गई और चेतावनी लिख दी गई कि कोई भी इसमें प्रवेश न करे। कालांतर में लोगों ने उस लोहे की जाली का अधिकांश हिस्सा तोड़ डाला फिर भी खौफ का आलम ये था कि उस कोठी के आसपास जानवर भी चरने नहीं जाते थे।

कोठी के परिसर में यूकेलिप्टस के पेड़ थे और वो बूढा बरगद का पेड़ भी था जिसमें अंग्रेज अफसर लटकता पाया गया था। हमने साइकिल वहीं खड़ी की और अंदर जाने की हिम्मत बटोरने लगे। बंटी,सोनू और टार्जन ने मुझे दोबारा समझाने की कोशिश की तो मैं अकेले ही कोठी में घुस गया और पीछे वे तीनों भी घुसे।

''भाई,मुझे तो हनुमान चालीसा भी याद नहीं, मेरा क्या होगा? ''बंटी ने परेशान होते हुए कहा।

''कोई बात नहीं, आत्मा अगर आए तो मेरा नाम बता देना, कुछ न उखाड़ पाएगी तुम्हारा...'' मैंने मजाकिया लहजे में कहा।

मुझे दरअसल पैरानॉर्मल चीजों, भूत–प्रेत इत्यादि के बारे में जानने का बहुत शौक था। सैकड़ों भूतिया फिल्में देख चुका था, उपन्यास,कहानियाँ,संस्मरण पढ़ चुका था लेकिन मैं उन नकारात्मक शक्तियों को एक बार महसूस करना चाहता था कि क्या वाकई वे होती हैं या फिर महज हमारा वहम हैं, हमारी कल्पनाओं का हिस्सा मात्र हैं। अँधेरा होने लगा था।

कोठी की एक दीवाल पर पुराना सा पत्थर लगा हुआ था जो गंदगी की वजह से काला पड़ गया था। थोड़ा साफ करने पर देखा तो उसमें कोठी के निर्माण का वर्ष अंकित था। पूरी इमारत एकदम जर्जर हालत में थी। सीलन भरी दीवारें और उगी हुई घास के साथ ऐसी घनघोर नीरवता जो किसी को भी भयभीत करने के लिए काफी थी। अंदर के कमरे में एक चिमनी बनी थी जिसमें सर्दियों में आग जलाकर लकड़ी की आराम कुर्सियों पर अंग्रेज बैठा करते होंगे। ये सम्भवतः बैडरूम रहा होगा। मैंने मोबाइल से वहाँ की कुछ फोटो ली और बाहर गैलरी में निकल आया। पीछे से मेरे तीनों डरपोक दोस्त जो डर से पसीने पसीने हो रहे थे लेकिन किसी तरह से मेरे साथ थे। अब अँधेरा बढ़ चुका था और हम लोग एक दूसरे का चेहरा भी स्पष्ट नहीं देख पा रहे थे। लेकिन जो कल्पना लेकर मैं यहाँ आया था उससे संबंधित कोई भी घटना अभी तक दृष्टिगोचर नहीं हुई थी। फिर हम लोगों ने निश्चय किया कि कोठी के पिछले हिस्से को देखकर हम वापस गाँव लौट चलेंगे। घर से एक बार फोन भी आ चुका था लेकिन मैंने झूठ कह दिया कि पहाड़ की तरफ गया हूँ, आने में थोड़ी सी देर हो जाएगी। हैरत की बात ये थी कि हममें से किसी फोन मे अब नेटवर्क नही आ रहे थे।

अचानक सूखे पत्तों पर किसी के दौड़ने की आवाज आई तो एकबारगी हम सब सिहर उठे। ''अरे, कोई जानवर होगा। भूत–वूत कुछ नहीं है इधर, फालतू का चूतियापा फैलाये पड़े हैं लोग..!''मैं अपना डर छिपाते हुए ये बात पूरी कहने ही वाला था कि मानवीय आकृति सदृश कोई दौड़ा और बरगद के पेड़ के नीचे बने कुँए में कूद गया।

'झम्म' की आवाज ने हमारे कानों को नहीं बल्कि हृदय को विदीर्ण कर दिया। बंटी की चीख निकल

गई और वो मुझसे लिपट गया।

अब मुझे खतरे का आभास हुआ।

क्या चीज थी वो जो उस कुँए में कूद गई?

क्या शायद कोई जानवर था ? मैंने ये झूठा तर्क मन में ही खुद को समझाते हुए कहा जबकि मुझे बखूबी पता था ये जानवर नहीं कुछ और ही था। हम चारों लोग इमारत के बिल्कुल बीच में बनी गैलरी में खड़े थे। दूसरे तरफ एक लान था जो कभी अच्छे फूलों और पौधों से गुलजार रहा होगा, फिलहाल उसमें आदमकद घास खड़ी हुई थी।

उस दिशा से भी कोई दौड़ता हुआ निकल गया। हमने एक दूसरे का हाथ मजबूती से पकड़ा और मोबाइल के फ्लैश के सहारे बाहर उसी कुँए की तरफ बढ़े जिसमें अभी कुछ क्षण पहले हमारे देखते देखते कोई कूद गया था।

लेकिन हमारा इरादा उस कुँए में झाँकने का नहीं था। अगर हमारी साइकिलें उस दिशा में न खड़ी होती तो यकीनन हम किसी दूसरी तरफ निकल जाते।

साइकिल उठाकर हम सड़क की तरफ भागे लेकिन ऐसा मतिभ्रम हुआ कि काफी देर साइकिल चलाने के बाद भी हमें कोठी के परिसर से बाहर जाने का रास्ता नहीं मिला। पीछे से कोई चीख सुनाई दे जाती तो जान हलक में आ जाती थी। एक खौफनाक आवाज सुनाई दी, मुड़कर देखा तो एक आदमी एक स्त्री और दो बच्चे जमीन से दो फुट की ऊँचाई पर हमसे लगभग दस मीटर पर खड़े थे और हमारी ओर बढ़ रहे थे। ये सम्भवतः वही अंग्रेज अफसर का परिवार था जिसका जिक्र हमने अपने बुजुर्गों से सुना था। हमारी चीख बहुत मुश्किल से निकली और हम चारों बेहोश हो गए। सुबह आँख खुली तो मैं बिस्तर पर था। पता चला कि सड़क के पास कोई गुजर रहा था उसने ही चीख सुनकर हमारी तलाश में इधर ही आ रहे गाँववालों को बता दिया और फिर वे लोग बेहोशी की हालत में हमें उठाकर ले आए थे। बंटी और सोनू को तेज बुखार था। टार्जन और मैं ही थोड़ा ठीक थे। घर पर सबकी डाँट पड़ी और बताया गया कि वे लोग काफी देर से फोन मिला रहे थे लेकिन नेटवर्क की वजह से संपर्क नहीं हो पा रहा था। बंटी, राजू और टार्जन के साथ मैंने भी उस जगह की तरफ

दोबारा जाने से तौबा कर ली।

कौन था वो जो कुएँ में कूद गया?

कौन था जिसकी हमें चीखें सुनाई पड़ी थीं?

विज्ञान की माने तो क्या ये सिर्फ हमारा वहम था और जो हमने आँखों से देखा वो झूठ था। अभी भी अनगिनत प्रश्न ऐसे हैं जो अनुत्तरित हैं। अभी भी ऐसी घटनाएं और जगहें हैं जो हमें विश्वास और अविश्वास के मुहाने पर ले जाकर खड़ा कर देती हैं।

गौ-मुख - रोमांचक यात्रा संस्मरण

अनूप कुमार टण्डन

पवित्र श्रावण माह में भगवान शिव का रूद्राभिषेक पूजन आयोजन की तैयारी चल रही थी। उल्लास भरे माहौल में पंडित जी का आगमन हुआ। पूजन सामग्री निरीक्षण करते गंगा जल भी मांगा। अरे सुनती हो– जैसे ही मैने पत्नी को आवाज दी, वह दो डिब्बों में गंगा जल लिये खड़ी थी, पूछा कौन सा हरिद्वार या गौमुख वाला। गौ–मुख गंगा जल सुनते ही पण्डित जी ने पूछा, '' आप गौमुख कब गये '' मै अतीत की स्मृतियों में खो गया।

बात लगभग 20 वर्ष पुरानी है जब मै लेखा परीक्षा कार्यालय में प्रतिनियुक्ति पर था। एक दिन – "मिस्टर टण्डन अगले सप्ताह आप उत्तर काशी जा रहे हैं कुछ सूचनाएं एकत्र करनी है। अपना टिकट आरक्षित करा लें। ''यह आदेश था वरिष्ठ लेखापरीक्षाधिकारी का। महोदय, जून के महीने में पहाड़ी यात्रा जोखिम भरी है, मैं नहीं जाऊंगा। मै साहब को आपके जाने के लिए हां कह चुका हूँ–प्रत्युत्तर में जवाब मिला। ''ठीक है यदि आपने कह ही दिया है तो कम से कम एक लेखा परीक्षक का यात्रा कार्यक्रम भी स्वीकृत कराने की कृपा करें, 'ठीक है । उत्तर मिला।''

इलाहाबाद से हरिद्वार होते हुए पहले पड़ाव की ओर प्रस्थान किया। जैसी आशंका थी, मध्य जून महीना नरेन्द्र नगर पहुंचते–पहुंचते वर्षा आरम्भ हो गई। तीव्र बौछार में बस के आगे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। संभवतः बस चालक अनुभवी एवं अभ्यस्त था। प्रतीत हो रहा था कि वह अनुमान से बस चला रहा था। चम्बा होते हुए टिहरी पहुंचते पहुंचते शाम हो गई। स्थानीय होटल में निवास किया। दूर पुरानी टेहरी में बांध निर्माण कार्य चल रहा था। विस्फोटों की आवाजें सुनाई दे रही थी। पीछे टेहरी कारागार दिखाई दे रहा था। यहां कार्य पूर्णकर प्रातः उत्तरकाशी के लिए प्रस्थान किया। यहां भी कार्य पूर्ण कर कार्यालय के बाहर निकला, सामने टैक्सी स्टैण्ड पर ड्राईवर गंगोत्री– गंगोत्री

की आवाजें लगा रहे थे मैने पूछा 'भाई कितना दूर है गंगोत्री और कितना समय लगेगा।' जवाब मिला– ''लगभग 110 किमी0 और समय लगभग चार घंटा' कुछ देर दुविधा में खड़ा सोचता रहा, गंगोत्री जाऊँ या न जाऊँ? साथी से पूछा उसने मना कर दिया। उसी कार्यालय में कार्यरत बाबू सोहन लाल जी से अनुरोध किया कि क्या आप मेरे साथ गंगोत्री चलेंगे पता नहीं जीवन में दोबारा कभी यहां आना हो अथवा नहीं, मैं आपका यात्रा खर्च भी वहन कर लूंगा। वह चलने को तैयार हो गये। मुख्यालय पर उप महालेखाकार महोदय से अनुमति प्राप्त कर ली।

टैक्सी तय कर ली। दो हम और दो अन्य पर्यटक एक साथ हो गये, इतराती बलखाती सर्पाकार सड़कों पर लगभग तीन घण्टे की यात्रा पूर्ण कर हम समुद्र तल से लगभग 8000 फिट की ऊँचाई पर धरती के मनोरम स्थल हर्षिल में खड़े थे, दूर सूर्य अस्ताचल के लिए तैयार था, उसकी सुनहरी किरणें बर्फ आच्छादित पर्वत शिखर पर स्वर्णिम छटा बिखेर रही थीं। सड़क के सामानान्तर किनारे कल–कल करती अविरल माँ भागीरथी चली जा रही थी। ऊँचे देवदारू के दरख्तों के दरम्यां सेना के कैम्प लगे थे। प्रकृति के इन अद्भुत नजारों में खोया था तभी ड्राइवर ने कहा 'साहब वो देखिये ये यहां का अति प्राचीन श्री लक्ष्मी नारायण जी का मन्दिर है।'' दूर से मन्दिर की बनावट उसकी प्राचीनता बयां कर रही थी। 'क्या यहां दर्शन करा दोगे' मन्दिर देखते पूछ लिया। "हां साहब क्यों नहीं यहां कुछ नाश्ता पानी कर लें ऊपर गंगोत्री पहुँचते–पहुँचते रात्रि हो जायेगी।'' ढाबे वाले को खाना तैयार करने का आदेश देते हुए शीघ्रता से दर्शन कर भोजनोपरान्त प्रस्थान किया। मन्दिर में अत्यन्त प्राचीन दुर्लभ मूर्तियां थी। धीरे–धीरे बूंदा बांदी हो रही थी। हवायें तेज चल रही थी। ठंड का एहसास हो रहा था। ऊनी वस्त्र के नाम पर मात्र एक स्वेटर था। सूर्य अस्त हो चुका था। अंततः हम गंगोत्री धाम बस अड्डे पर खड़े थे, सबसे पहले रहने की व्यवस्था की, लाज में ठहर गये। अति वेग से प्रवाहित होती भागीरथी के शिलाखण्डों से टकराने पर दिल धड़काने वाली ध्वनि उत्पन्न हो रही थी। चारपाई के कंपन से भूकम्प में लेटे होने का एहसास हो रहा था। यहां विद्युत व्यवस्था नहीं थी। जनरेटर उस शोर को और बढ़ा रहे थे। मन्दिर में दर्शन कर भगवान का नाम लेकर रात्रि काटी।

प्रातः मन्दिर के घण्ट नाद ने जगाया ऊपर आये सामने श्वेत पत्थरों से निर्मित सुशोभित मन्दिर था, बगल में भागीरथी बह रही थी पक्के बने घाट पर लोटे से स्नान कर अपने पूर्वजों को नमन किया,

आरती दर्शन का आनन्द लेते हुए आस पास भ्रमण के पश्चात पास ही बनी पत्थर की सीढी से ऊपरी सड़क पर पहुँच गये। यहां टट्टू वाले गौ मुख ले जाने के लिए सवारियां ढूँढ रहे थे। मन में पुनः लालच जागा मैने उससे पूछा ''भाई गौमुख कितना दूर है और कितना किराया है।''जवाब मिला ''लगभग 18 किमी0 और 800/– किराया आना और वापसी। मैं पुनः दुविधा में था। सोहन भाई आपका क्या विचार है? 'आपको दर्शन कराकर कुछ पुण्य मै भी अर्जित कर लूँगा।' जवाब मिला। सामने जाता रास्ता सीधा दिखाई दे रहा था। 1600/– भाड़ा सोचकर हम लोग पैदल ही निकल पड़े परन्तु ये क्या पहाड़ का मोड़ खत्म होते ही खड़ी चढ़ाई दिखाई दी। सोहन लाल जी दुबले पतले थे वह तीव्रता से आगे बढ़ गये। मेरा भारी शरीर होने से उनके मेरे बीच की दूरी बढ़ गई। वह अगला मोड़ पार कर चुके थे। निढाल पस्त पड़ा था। न आगे जाने की हिम्मत थी न पीछे लौटने की। यात्री भी कम थे। भाग्यवश एक टट्टू वाला दिखाई दिया। गौमुख चलोगे। हां चलूँगा परन्तु भाड़ा रू0 1000/– और रात्रि में ही वापस गंगोत्री लौट आऊँगा। दम निकालने वाली चढ़ाई थी असहाय था, कोई विकल्प नहीं था सो टट्टू पर बैठ गया। यात्रा पुनः प्रारम्भ की। सूर्यदेव प्रचण्ड थे पूर्व की दिशा में चढ़ाई थी। घोड़े की जीन्स दोनो पैर दुखा रही थी परन्तु रोमांचक एहसास लुभा रहा था। पगडण्डी के संकरे पथरीले रास्तों के ऊपर कच्ची मिट्टी के लटकते शिलाखण्ड नीचे लुढ़कने को आतुर थे। कहीं कहीं इतने नीचे पहाड़ की टट्टू को घुटने के बल चलना पड़ता था। गर्मी से हाल बेहाल था। ऊपर से बहते हुए झरने प्यास बुझाने के स्त्रोत थे। टट्टू की सवारी रोमांचक थी। अचानक यात्रा का लिया गया निर्णय कष्टदायी प्रतीत हो रहा था। उस क्षण को मन ही मन कोस रहा था। इतने दुर्गम रास्तों और कष्टों के पश्चात् भी मन में हिलोरे ले रहा आस्था का संगम हौसला और हिम्मत दे रहा था। सोहन लाल जी दूर तक नजर नहीं आ रहे थे। चलते–चलते हम पहले पड़ाव चीड़ वृक्ष के जंगल से घिरे चीड़ बासा पहुंच गये। लगातार पदयात्रा से थके सोहन लाल जी यहीं प्रतीक्षा कर रहे थे। चाय नाश्ता कर गंगाजल के लिए दो डिब्बे खरीदकर आगे की यात्रा के लिए उन्हें भी एक टट्टू पर बैठा दिया । यहां से आगे दूसरा पड़ाव भोजवासा था। यहां विविध रंगों के शिलाखण्ड हिम क्षरित होने के कारण उन पर उभरी आकृतियां ऐसी प्रतीत हो रही थीं मानो प्रकृति ने स्वयं अपने हाथों से गंगा माँ के आगमन पर श्रृंगार किया हो । अब लगभग चार किमी0 की यात्रा शेष थी। लगातार यात्रा से हाल बेहाल था । भोजवासा

के टेन्ट में कुछ यात्री दिखाई दिये परन्तु टट्टू वाला और सोहन लाल जी विश्राम के मूड में नहीं थे ।

दोपहर हो चली थी, तभी टट्टू वाले ने कहा "साहब वो देखिये सामने गौ–मुख ग्लैशियर है। ''आखिरी आधा किमी0 रूह कंपाने वाली नुकीले धारदार पत्थरों के ऊपर से पूर्ण करना चुनौती था। दूर–दूर तक कोई दिखाईं नहीं दे रहा था। अपनी वार्ता जारी रखते हुए कहा– ''बस साहब जी यहां से ग्लैशियर आरम्भ है पास ही से पेड़ की दो टहनी उठा लाया और समझाया यह ग्लैशियर है कही–कहीं बर्फ पिघलने से सतह पोली भी हो सकती है। जमीन ठोक कर आगे बढ़ियेगा, मै यहीं प्रतीक्षा करता हूँ। हम ग्लैशियर पर खडे थे कोई दिखाई नहीं दे रहा था निगाहें गौ मुख ढूंढ रही थी। थोड़ा आगे जाने पर एक साधु पर दृष्टि पडी। वह तपस्या में लीन थे उन्हें प्रणाम कर वहीं बैठ गये, उनकी तन्द्रा भंग हुई पुनः प्रणाम किया। 'क्या चाहते हो? सख्त आवाज से पूछा।' बाबा जी गौ मुख ढूंढ रहे हैं नहीं मिल रहा है।'' गौ मुख पर हो फिर भी ढूंढ रहे हो समस्त ग्लैशियर गौमुख है । बाबा जी हम ढूढ़ रहे है कि गंगा जी कहाँ से अवतरित हो रही है। उन्होंने अपने पीछे स्थित हिमखण्ड की ओर संकेत करते हुए कहा– ''इसके पीछे जाओ उद्गम स्थल मिलेगा। जिस हिमखण्ड की ओर संकेत किया था उसकी परिधि लगभग बीस मीटर थी। पिघली बर्फ के जलकणों पर पड़ती सूर्य किरणें लाखों इन्द्रधनुषी छटा बिखेर रहीं थीं। मन में डर समाया कि अचानक यदि यह फट जाए तो हम हिम समाधि में परिवर्तित हो जायेंगे। आस्था ने मन पर काबू पाया और फिर चढ़ गये ऊपर। नीचे सामने बर्फ की छोटी सी गुफा से गंगा जी अवतरित हो रहीं थीं, यही था उद्गम स्थल मां गंगा का।

गुफा के मुहाने पर पहुंचकर मन और हृदय हर्ष और उल्लास से प्रफुल्लित था। थकान और भय भाग चुके थे, नई ऊर्जा का संचार हो चुका था। यहां जलधारा बहुत पतली थी। नतमस्तक हो प्रणाम कर डिब्बे में जल भर पूर्वजों का ध्यान कर स्नान किया जी भर जल आचमन कर उन पलों को कैमरे में कैद किया। शाम होने को थी, शीघ्र वापसी की। पुनः महात्मा जी को प्रणाम कर आर्शीवाद प्राप्त कर गंगोत्री धाम के लिए प्रस्थान किया। ऊपर तपोवन देखने का समयाभाव था। टट्टू वाले को भी शीघ्रता थी वह पूर्णमासी की रात थी, चांद अपने पूरे शबाब पर था पर्याप्त चन्द्र किरणे बिखरी थी। टट्टू वाले से कहा भाई रात्रि यहीं भोजवासा या चीड़वासा में विश्राम कर ले परन्तु उसे गंगोत्री लौटने

की शीघ्रता थी। चन्द्र प्रकाश में हम तीव्रता से आगे बढ़ रहे थे। सहयात्री भी कम थे। टट्टू पगडण्डी पर किनारे चल रहे थे। नीचे गहराई में मां भागीरथी का शोर सुनाई दे रहा था। भय था कि ऊपर से भू–स्खलन न हो जाये, तभी अचानक 'बचाओ' की आवाज आई। सोहन लाल जी का टट्टू वाला नीचे गिर गया। शोर हुआ आगे–पीछे वाले यात्री वहीं ठहर गये। उसके साथी टार्च ले ढूंढने लगे तभी अचानक 'मै यहां फंसा हूँ' आवाज आई। ट्टटू की रस्सियों को जोड़कर उसके सहारे साथी उसे ऊपर निकाल लाये, वह पर्याप्त चोटिल था एक डिब्बा जल वापस नदी में जा चुका था चारों ओर नीरवता फैली थी केवल नदी का शोर सुनाई दे रहा था। रोमांचक यात्रा पूर्ण कर मध्य रात्रि गंगोत्री में थे। प्रातः स्नान ध्यान कर मां गंगा की पूजा आरती कर प्रस्थान किया।

अभी स्मृतियों में ही खोये थे कि पण्डित जी का स्वर सुनाई दिया– ''अरे टण्डन जी तैयारियां पूर्ण हो गई है, रूद्राभिषेक प्रारम्भ करने से पूर्व इस जल का आचमन करना चाहता हूँ। ठीक है मैने कहा– आचमन करते ही कहा ''धन्य हो गंगा माँ 20 वर्षों में भी न तो जल का रंग बदला और न स्वाद। भगवान शिव का रूद्धाभिषेक प्रारम्भ हो गया।''

कुम्भ में सन्त ज्ञान

पी0पी0 शर्मा

वर्ष 2019 में बस कुछ माह पहले ही प्रयाग में कुंभ मेला लगा था। कुम्भ की रेती में प्रयागराज जिले के सभी शासकीय कार्यालयों का एक एक कैम्प कार्यालय भी स्थापित किया गया था। परेड ग्राउन्ड में लगे विभिन्न कैम्प कार्यालयों में ए0जी0 ऑफिस का महत्व ठीक वैसे ही जान पड़ रहा था जैसे कि सभी तीर्थों में प्रयाग का। लगता भी क्यों नहीं, विभिन्न शासकीय कार्यों के संचालन में केन्द्र बिन्दु की तरह ही ए0जी0 आफिस भूमिका जो निभाता है। कुम्भ में ऑफिस हो जाने से कर्मचारियों को शासकीय कार्य और कुम्भ दर्शन का दोहरा लाभ लेने का मौका मिलने लगा था। धर्मग्रन्थों की विवेचना सहित संतो की वाणी, श्रद्धालुओं के मन को कुम्भ संगम में गोता लगवा रही थी। शर्माजी भी एक दिन कैम्प कार्यालय पहुँचने के लिए एक सन्त पण्डाल के सामने से गुजर रहे थे, कि कानो में सन्त ज्ञान सुनायी दिया, जो कह रहे थे कि ''यह संसार हो या शरीर जितना आकर्षित दिखता है उतना है नहीं, लेकिन इसमें धर्म संगत कर्तव्य करके मुक्ति जरुर पा सकते हैं''। बस सोचते हुए ए0जी0 कैम्प की ओर बढ़ते ही जा रहे थे कि उन्हें पहली बार ऐसा लग रहा था कि मानवीय शरीर भी तो कुम्भ सदृश ही है। गंगा यमुना सरस्वती की तरह इसमें भी इड़ा पिंगला एवं सुसम्ना हैं। कुम्भ की कथाओं में जिस प्रकार दिती अतिती कश्यप ऋषि की पत्नियों से दैत्य और देवों का वर्णन मिलता है ठीक वैसे ही बुराई और अच्छाइयां इसमें सन्निहित हैं। मानव अगर धर्मग्रन्थों के अनुसार अपने कर्तव्यों का निर्वहन करे तो निश्चित ही मुक्ति आसानी से प्राप्त कर सकता है।

उधर ए0जी0 महोदया शासकीय नियमों की विवेचना सहित कर्तव्यों के वर्णन से कुम्भ की रेती पर कैम्प कार्यालय से अपने समस्त कर्मचारियों/अधिकारियों को कुम्भ की महिमा से रुबरु करा रहीं

थी। इतना ही नही पण्डालों में प्रवचन के बाद भण्डारे हो रहे थे। ठीक वैसे ही उत्तरदायित्वों की चमचमाती हुयी थाली में षटरस भोजन का प्रसाद कैम्प कार्यालय में भी वितरण किया जा रहा था। जीवन के इस उम्र के पड़ाव में पारिवारिक उत्तरदायित्व भी बढ़ गये थे। सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि पहले एक मन और मस्तिष्क से ही कार्य के सोच विचार का निर्णय लेते हुए अपने दायित्व और कर्तव्यों को आसानी से पूरे किये जा रहे थे। लेकिन अब लिए जाने वाले निर्णयों में पारिवारिक सदस्यों का मस्तिष्क भी आड़े आने लगा था।

बस कुछ दिन बाद कर्तव्य महिमा की छवि को संजोये, चंद्रमा और सूर्य तरह, राहू और केतु से पीड़ित सांसारिक शर्माजी आर्तभाव से अपना आवेदन विभागाध्यक्ष के समक्ष कुछ इस तरह प्रस्तुत किये थे–

कि वह पारिवारिक समस्याओं से उत्पन्न मानसिक क्लेश के कारण शासकीय सेवा कार्यों को पूर्ण मनोयोग से करने में कठिनाई महसूस कर रहे हैं। उसको सौपें गये प्रभार में कार्यालय के कर्मचारियों के वेतन भत्तों का आहरण, पेंशन, चिकित्सा एवं पेंशन पुनरीक्षण से संबंधित कार्यों में विशेष रुप से ध्यान रखने की आवश्यकता होती है। जांच में जरा सी असावधानी से गलत भुगतान का डर रहता है।

उसकी सेवानिवृत्ति में आठ माह शेष हैं, और अभी तक की 36 वर्षों की सेवा में ऐसा असंतुष्टि भाव मन में कभी नहीं आया। अतः आपसे अनुरोध है कि मुझे स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति देने की कृपा करें।

अरे! ये कौन सी बड़ी बात है आप तो अच्छा काम कर रहे हैं। रिटायरमेंट लेकर क्या सबकुछ अच्छा हो जायेगा, और बढ़ जायेगा। घर–घर का यही हाल है। शर्माजी सतयुग नहीं है सभी जगह राहू–केतू पैदा हो गये हैं। आज ऐसा दौर ही चल पड़ा है कि कोई घर रहना नहीं चाहता। जाइए छुट्टी लेकर कहीं घूम आइए। सब ठीक हो जाएगा।

ऑफिस से शाम को घर पहुँचे। पत्नी चाय ले आयी, बस एक घूँट पिया था कि दिल्ली से लड़के का फोन आया। कहने लगा कि वो (उसकी पत्नी) फ्लैट में ही रहना चाहती है। किराये के मकान में नहीं आना चाहती। आप लखनऊ फोन करिये कि वो चली जाये। ''ठीक है,'' शर्माजी बोले–

और मन में उठे विचार को मोबाइल लेकर वाट्सएप पर लिखने लगे–

जल में, थल में, हो या उपवन में,
जहां हो बस डूबे उसके चिंतन में
अकर्मण्य थे अपने कर्म से
आकर्षित हो रहे उनके तन से
अड्डा पै बैठी वो तड़ गये
लटके सांप को पकड वो चढ़ गये
फुफकार सांप की न सुनाई दी
खर्राटे ले रही प्रेमिका सुनाई दी
शिल्पी खोल दरवाजा मैं आ गया
कैसे आये––वह भी बता गया
देख सांप को – वह डर गयी
कीट सदृश देख वो भी तड़ गयी
आदमी योनि कीट है लगी सोचने
उद्धार कैसे हो फिर लगी सोचने
सोच नासमझ लग सद्कर्म में
जो देखता है, सच वो है नहीं
चिंतित क्यों उसके चिंतन में।

दक्षिण भारत की यात्रा वृत्तांत

डॉ0 नित्य नाथ पाण्डेय

''जिंदगी जब तक रहेगी, फुर्सत ना होगी काम से।
कुछ समय ऐसा निकालो, प्रेम करलो श्रीराम से।।''

सनातन धर्म के सिद्धान्त के अनुसार जीव को मानव–जीवन चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करने के बाद मिलता है। मानव का मर्त्य लोक में जन्म लेने का परम लक्ष्य आत्मोद्धार करना अर्थात परमात्मा का साक्षात्कार करना है। जिसके लिए मनुष्य को अपना कर्तव्य–कर्म करते हुए आध्यात्म के क्षेत्र में लगे रहना चाहिए। सनातन सिद्धान्त के चार आश्रम कहे गए हैं, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। मनुष्य की आयु 100 वर्ष की मानते हुए प्रत्येक आश्रम को 25 वर्ष माना गया है। वास्तव में मनुष्य संयम–सदाचार, शुद्ध आहार–विहार आदि का पालन करते हुए शतायु हो सकता है। उक्त के अभाव से ही आयु में कमी भी आ जाती है।

इस हेतु देशाटन अर्थात धार्मिक पर्यटन भी किया जाना आवश्यक है। इसी क्रम में मुझे भी अवकाश यात्रा रियायत (LTC) के तारतम्य में दिनांक 28.09.2019 दिन शनिवार से 11.10.2019 दिन शुक्रवार तक दक्षिण भारत के महत्वपूर्ण स्थानों, सिद्ध तीर्थों, मंदिरों के दर्शन व भ्रमण का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस यात्रा में हम अपनी धर्म पत्नी के साथ तथा अपने एक परम मित्र भी सपत्नीक साथ थे। हम लोग कुल 4 लोग थे जिससे पूरे यात्रा के दौरान असुविधा नही हुई बल्कि आनंदपूर्वक आनॅलाइन रिजर्वेशन करा लिया था।

यात्रा क्रम में प्रथमतः दिनांक 28.09.2019 दिन शनिवार को अपरान्ह 4:30 बजे वंदे भारत ट्रेन से प्रयागराज से चलकर नई दिल्ली उसी रात्रि 11:00 बजे पहुँचे। वहां से टैक्सी द्वारा इंदिरा गांधी एयरपोर्ट पहुँच गए। दिनांक 29.09.2019 को प्रातः 5:15 बजे एयर इंडिया की फ्लाइट से हम लोग उसी दिन प्रातः 8:35 तिरूवनंतपुरम, केरल एयरपोर्ट पर पहुंचे।

वहां से बाहर निकलकर टैक्सी से लगभग 3 किलोमीटर दूर चलकर श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर के पास पहुंचकर एक होटल में रूके। वहां स्नानादि के बाद श्री पद्मनाभस्वामी जो कि भारतवर्ष में सबसे धनी मंदिर है, उनके दर्शन के लिए गए। दक्षिण भारत के मंदिरों में प्रायः टिकट लेकर ही दर्शन करने की व्यवस्था रहती है। सामान्य एवं स्पेशल दो तरह का टिकट रहता है। यहां पर हम लोग स्पेशल टिकट लेकर गए और दिव्य दर्शन प्राप्त हुआ। बाहर आकर हम लोगों ने लगभग 1:00 बजे दिन में टैक्सी बुक किया और तिरूवनंतपुरम के अन्य प्रसिद्ध मंदिरों व स्थलों का दर्शन व भ्रमण किया। अरब सागर के किनारे बनी झील में बोटिंग का आनन्द भी लिया गया। रात्रि विश्राम होटल में करके अगले दिन पुनः श्री पद्नाभस्वामी का दिव्य दर्शन किया गया और वहां से दिनांक 30.09.2019 को शाम 4:00 बजे केरल राज्य सड़क परिवहन निगम की बस में बैठकर रात्रि लगभग 9 बजे नागइकोइल होते हुए कन्याकुमारी, तमिलनाडु प्रदेश पहुंचे। वहां मंदिर के पास एक होटल में रूके और रात्रि विश्राम किया गया। वहां पर शुद्ध शाकाहारी भोजनालय में भोजन प्रसाद प्राप्त किया।

अगले दिन दिनांक 01.10.2019 को प्रातः सूर्योदय के लगभग 1 घंटे पूर्व ही स्नानादि से निवृत्त होकर हम लोग समुद्र के किनारे जाकर सूर्योदय का मनोरम दृश्य देखा। वहां से देवी कन्याकुमारी जी के मंदिर जाकर उनका दिव्य दर्शन प्राप्त हुआ, यह शारदीय नवरात्रि की तीसरी तिथि थी। वहीं पर समुद्र में चट्टान पर स्थित स्वामी विवेकानंद मेमोरियल व तमिल कवि तिरूवल्लूर का स्मारक का दर्शन मोटर बोट से जाकर प्राप्त किया। इसके बाद भोजन प्रसाद आदि करके एक यात्री बस में सवार होकर कन्याकुमारी शहर में स्थित अन्य कई प्रसिद्ध मंदिरों व स्थलों का दर्शन व भ्रमण किया गया। समुद्र के किनारे सायं सूर्यास्त का दृश्य देखा गया। उसी दिन दिनांक 01.10.2019 को रात्रि 9:30 बजे ट्रेन से मदुराई होते हुए दिनांक 02.10.2019 को प्रातः 5:30 बजे रामेश्वरम् में आ गए।

रामेश्वरम् में पहुंचकर बांगड़ धर्मशाला में कमरा लेकर रूके। स्नानादि से निवृत्त होकर हम लोग श्री रामनाथ स्वामी मंदिर के एक गाइड/सेवादार जो कुण्डों से जल लेकर स्नान भी कराते हैं, उनके साथ जाकर पहले समुद्र में स्नान किया फिर आगे चलकर गीले वस्त्र ही 22 विभिन्न तीर्थ के नाम के कुंड (कूप) जल से स्नान किया गया। उसके पश्चात् वस्त्र बदलकर भगवान श्री राम जी द्वारा प्रतिष्ठापित उनके आराध्य देव भगवान श्री शिव जी (रामनाथ स्वामी) का दिव्य दर्शन प्राप्त हुआ।

वहां से बाहर आकर धर्मशाला में शुद्ध शाकाहारी भोजन (लहसुन व प्याज के बिना) का प्रसाद ग्रहण किया गया। थोड़ी देर आराम करने के बाद लगभग दो बजे अपरान्ह में एक टैक्सी से हम लोग श्रीराम सेतु, धनुषकोडि,गन्धमादन पर्वत आदि अन्य स्थल व मंदिरों का दर्शन एवं भ्रमण किया और लगभग 7:00 बजे सायं तक वापस धर्मशाला आ गए। वहीं पर भोजन प्रसाद व रात्रि विश्राम किया गया।

पुनः दिनांक 3.10.2019 को प्रातः 5:30 ट्रेन से हम लोग लगभग 8:30 बजे मदुराई आ गए। वहां पर आते ही एक ट्रैवल कम्पनी से तिरुपति बालाजी आंध्र प्रदेश को जाने हेतु एसी स्लीपर बस बुक करा लिया। ट्रैवल कम्पनी ने ही मदुराई में रुकने के लिए होटल व स्थानीय अन्य मंदिर व स्थलों के भ्रमण हेतु एक टैक्सी की भी व्यवस्था की। होटल में रुक कर स्नान आदि के बाद मां मीनाक्षी देवी का दिव्य दर्शन प्राप्त हुआ। बाहर आकर होटल में भोजन प्रसाद ग्रहण किया गया और फिर टैक्सी से अन्य मंदिरों व स्थानों का भ्रमण करके लगभग 10:30 बजे रात्रि बस से तिरुपति बालाजी के लिए प्रस्थान किया। अगले दिन दिनांक 4.10.2019 को प्रातः लगभग 9:00 बजे तिरुपति पहुंचे। वहां बस स्टेशन के पास होटल में रुके। स्नानादि व भोजन प्रसाद के बाद तिरुपति में स्थानीय अन्य मंदिरों के दर्शन हेतु एक टैक्सी से भ्रमण किया और सायं 8:00 बजे होटल वापस आ गए।

पुनः दिनांक 5.10.2019 को प्रातः 6:00 बजे बस द्वारा तिरुमाला पहाड़ी पर स्थित भगवान वेंकटेश के दर्शन हेतु गए। उस समय शरद नवरात्रि के अवसर पर ब्रम्होत्सव मनाया जा रहा था जिससे दर्शन टिकट मुक्त (फ्री) हो गया था। वैसे अन्य दिनों में सामान्य टिकट व विशेष टिकट लेकर ही दर्शन किया जाता है। उस दिन यात्रियों की संख्या लगभग 2–3 लाख रही होगी। फिर भी व्यवस्था बहुत ही उत्तम थी। पर्याप्त सुरक्षा जाँच के साथ निशुल्क भोजन प्रसाद भी वितरण किया जा रहा था। एक ए0सी0 हाल में प्रातः 8:00 बजे से 5:00 बजे तक हम लोग बैठाए गए थे, जहां से आगे चलकर सायं 6:00 बजे के लगभग हम लोगों को भगवान श्री वेंकटेश स्वामी जी के भव्य–दिव्य दर्शन प्राप्त हुआ। लगभग 10:00 बजे रात्रि को हम लोग बस से पुनः तिरुपति वापस आकर होटल में रुके। दिनांक 6.10.2019 को पुनः हम लोग तिरुमाला बस द्वारा गए और वहां पर भ्रमण व मार्केटिंग आदि किया गया। सायं वापस तिरुपति आ गए। उसी दिन रात्रि लगभग 9:30 बजे रिजर्वेशन से ट्रेन द्वारा

मैसूर, कर्नाटक प्रदेश के लिए चले और दिनांक 7.10.2019 को प्रातः लगभग 10:00 बजे मैसूर पहुंचे। उस समय वहां दशहरा का उत्सव चल रहा था। मैसूर का दशहरा भारतवर्ष में बहुत प्रसिद्ध है। इस त्यौहार के कारण बहुत मुश्किल से ठहरने हेतु होटल मिला। उस दिन होटल पहुंचकर स्नान भोजन आदि से निवृत्त होकर हम लोगों ने टैक्सी द्वारा प्रसिद्ध मां चामुंडेश्वरी देवी मंदिर, वृंदावन गार्डन आदि का दर्शन भ्रमण किया।

पुनः दिनांक 8.10.2019 को विजयदशमी के उपलक्ष्य में नगर भ्रमण हेतु मैसूर राजमहल से निकल रही आकर्षक व दिव्य झांकियों को देखा। इस अवसर पर पूरा नगर 3 दिन तक दिव्य भव्य विद्युत झालरों की रोशनी से प्रकाशमान रहा। वहां दिनांक 9.10.2019 को प्रातः 7:00 बजे बस बुकिंग के द्वारा दिन भर पहाड़ पर स्थित ऊटी (मनोरम दृश्य स्थल) का भ्रमण किया। जहां सुरम्य झील व सुंदर बॉटनिकल गार्डन व सुंदर मार्केट है।

दिनांक 10.10.2019 को प्रातः 8:00 बजे ट्रेन से रिजर्वेशन में चलकर 10:30 बजे प्रातः बेंगलुरु, कर्नाटक पहुंचे। जहां टैक्सी से एयरपोर्ट के पास पहुंचकर एक होटल में रुके और स्थानीय स्थलों का भ्रमण किया गया। रात्रि विश्राम के बाद दिनांक 11.10.2019 को एयर इंडिया की फ्लाइट से प्रातः 10:00 बजे प्रस्थान कर वाया नई दिल्ली बमरौली, प्रयागराज अपरान्ह 4:30 बजे वापस आए।

यात्रा के समापन पर हम कह सकते हैं कि यात्रा बहुत ही आनंददायक रही। सब कुछ सरल ढंग से संपन्न हुआ। हमारा अनुभव रहा है कि ऐसी यात्रा में मुख्य स्थान का जाने व वहां से वापस आने का हवाई या ट्रेन का रिजर्वेशन करा लेना आवश्यक है। वहां पर पहुंचकर स्थानीय यात्रा समयानुसार ट्रेन व बस से रिजर्वेशन या जनरल द्वारा किया जा सकता है। प्रत्येक स्थान पर ठहरने का होटल व खाने का शुद्ध शाकाहारी भोजन का रेस्टोरेंट आदि उपलब्ध हो जाता है। इसी प्रकार भगवान सभी को अपने दरबार में बुलाएं और दर्शन दें, यही हमारी कामना है।

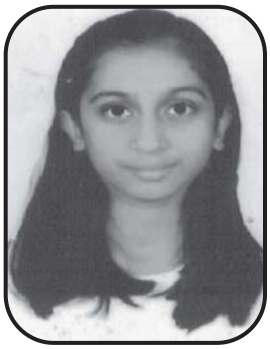

बेटी बचाओ-बेटी बचाओ

आकृति कुशवाहा

एक बार की बात है। एक लड़की थी वह मसूरी में रहती थी। उसके पापा उसे बहुत प्यार करते थे। वह उसकी हर इच्छा को पूरी करते थे। वह लड़की भी अपने पापा की हर बात मानती थी। मगर उसकी माँ नही थी। जब वह पैदा हुई थी तभी उसकी माँ के प्राण पखेरु उड़ गए थे। उसके पापा बहुत नए जमाने के थे। उसका एक भाई भी था। वह उससे बड़ा था लेकिन उसका भाई कभी उसे पंसद नही करता था। वह उसे अपनी बहन नही मानता था क्योंकि उसके आने से उसकी माँ मर गई थी इसलिए वह उसे मनहूस समझता था लेकिन उसके पापा ने कभी उसे इस बात के लिए नही कोसा था क्योंकि उन्हें बेटियाँ बहुत पंसद थी। उसके भाई ने तो उसे कई बार जान से मारने की कोशिश और धमकी दी थी लेकिन ऐन वक्त पर उसके पापा आ जाते थे। उसके पापा हमेशा उसे अपनी रक्षा के नए नए तरीके बताते रहते थे ताकि वह ऐसी जगहों पर सुरक्षित रह सके। लेकिन वह अभी सिर्फ 8 साल की थी इसलिए कुछ बातें उसे समझ में आती थी और कुछ नहीं आती थी। अब करीब 3 साल के बाद वह 11 साल की हो गई थी और उसने काफी कुछ सीख लिया था। उसके पापा उसे यह सब इसलिए सिखाते थे क्योंकि उनकी एक बेटी की मौत भी कुछ इसी वजह से हुई थी क्योंकि उसे आत्मरक्षा नहीं सिखाया गया था।

उनकी बड़ी बेटी का नाम नित्या था। वह फिल्म इन्डस्ट्री में काम करती थी उसने कई नाटक किए थे। एक बार वह शाम अपने रक्षकों के साथ खरीददारी करने गई थी तभी वहाँ कुछ गुंडे आ गए और उन्होनें उसके रक्षकों को मार डाला और अब नित्या बिल्कुल अकेली हो गई थी तभी गुंडो ने मौका देखकर उसके शरीर और चहरे पर तेजाब की पूरी बोतल डाल दी और वहाँ से भाग गए। वह बुरी तरह से कराह रही थी लेकिन उसकी मदद करने वहाँ कोई नही गया सिर्फ इसलिए कि कहीं पुलिस उन्हें भी पकड़ कर न ले जाए अगर उस समय वहाँ पर नित्या की मदद करने कोई चला जाता

तो वह बच जाती लेकिन अब क्या कर सकते हैं।

इसी वजह से वह अपनी बेटी को आत्मरक्षा के तरीके बताते थे ताकि अगर ऐसी कोई परेशानी पड़े तो वह खुद भी लड़ सके अपनी बहन की तरह सहायता न मांगे।

उसके पापा ने उसे उसकी बड़ी बहन की कहानी बताई तो उसे समझ में आया कि उसके पापा उसे यह सब क्यों सिखाते हैं। तभी से उसने फैसला कर लिया कि वह कड़ी मेहनत से यह सब सीखेगी और अपनी बहन का बदला वह लेगी। और फिर तभी से वह कराटे और डांस क्लासेज में जाने लगी। वह कराटे आत्म रक्षा के लिए सीखती थी और डांस लचीली होने के लिए सीखती थी।

जब वह करीबन 18 साल की हो गई तब उसने स्कूल की पढ़ाई पूरी कर ली और अपना पूरा ध्यान कराटे और डांस पर देने लगी। एक दिन उसने अपने पापा से पूछा कि वह लोग कहाँ मिलेगें तो उसके पापा ने पूछा किस लिए तुम उन लोगों के बारे में पूछ रही हो। उसने सर हिलाते हुए कहा बदला लेने के लिए तो उसके पापा ने कहा पाँचवे पुल के फरियाद गंज के बरगद के पेड़ के नीचे। तभी उसने अपनी साइकिल उठाई और चल पड़ी इन्साफ के लिए।

जब वह वहाँ पर पहुंची तब उसने बरगद के पेड़ को ढूँढा। पूरे शहर में सिर्फ दो ही बरगद के पेड़ थे एक पेड़ के नीचे तो कोई नहीं था। तो उसके पूछ ताछ करने पर पता चला कि उस पेड़ से ठीक दो किलोमीटर दूर एक और बरगद का पेड़ है।

जब वह वहाँ पहुँची तो उसे गुंडे मिल गए फिर उसने उन लोगों से बात की और सारी घटना याद की कि कैसे उन लोगों ने उसकी बहन को मारा था। तभी उन लोगों ने उसके ऊपर भी तेजाब डालने की कोशिश की लेकिन लड़की ने आत्म रक्षा सीख रखी थी और उसने अब तक जो भी सीखा था सब कुछ उसने आजमा लिया और गुंडो को चारों खाने चित्त कर दिया और तेजाब की बोतल उन सब पर डाल दी और वह तड़प तड़प कर मर गए और सभी लोग जो उसके आस पास खडे थे सभी ताली बजाने लगे और उसे शाबाशी देकर कहने लगे कि जो काम बीस सालों में कोई न कर सका वो काम तूने बीस मिनट में कर दिखाया फिर उसकी तस्वीरें टी0वी0 और सोशल नेटवर्क पर छा गई।

इस लिए कहते हैं कि बेटी को बोझ मत मानो बेटियां वो कर सकती हैं जो किसी ने सोचा न हो।

बेटी बचाओ–बेटी बचाओ

बेटी बचाओ–रक्षा सिखाओ

बुजुर्गों का सम्मान-सुख की कुंजी

सतीश राय

भारत वर्ष एक धर्म प्रधान देश है यहाँ पर वर्ष पर्यन्त स्थान–स्थान पर धार्मिक अनुष्ठान होते रहते हैं। धर्म हमें बड़े–बुजुर्गों की सेवा एवं सम्मान करने की शिक्षा देता है। बड़े बुजुर्गों की सेवा करने से हम और हमारे बच्चे सुखी रहते हैं।

धार्मिक आयोजन हमें अन्दर से मजबूत बनाते हुए पाप–पुण्य का बोध कराते हैं। हमें हमारी अन्तरात्मा में महसूस होता है कि फलाँ कार्य गलत है। किसी कार्य के अनुचित होने का बोध हमें धार्मिक ज्ञान के माध्यम से ही होता है इसीलिये श्रवण कुमार अपने अन्धे माता–पिता को बहंगी द्वारा कंधे पर लाद कर चार धाम की यात्रा कराने चल दिये थे। प्रभु श्री राम ने पिता के वचनों को पूर्ण करने के उद्देश्य हेतु राजसी ठाठ–बाट का परित्याग कर जंगल में जाने के मार्ग का चयन किया था। यहाँ पर भक्ति समर्पण का भाव रहता है तभी तो पूर्व में सभी लोग अपने बड़े–बुजुर्गों की बातों का सम्मान करते थे।

पश्चिमी सभ्यता को अपनाने के कारण यहाँ पर लोगों में भक्ति व समर्पण की भावना में कमी आती जा रही है और बुजुर्गों की अवहेलना में वृद्धि हो रही है जिसके कारण यहाँ पर अनेकों वृद्धाश्रम खुलते जा रहे हैं, लोग अपने बुजुर्गों की उपेक्षा कर रहे हैं। यदि वे हमें कुछ समझाते हैं तो उनकी बातों को हम नहीं मानते हैं जिसके चलते आगे चलकर अनेक समस्याओं से ग्रसित हो जाते हैं फिर भी हम इससे सबक नहीं ले रहे हैं।

बुजुर्गों के प्रति मन में सम्मान की कमी के कारण हम अपने बुजुर्गों के अनुभव का लाभ नहीं ले रहे हैं, उनके सुझावों की अवमानना कर देते हैं हम युवा व बलवान (शक्तिशाली) होने के दंभ में चूर रहते हैं, हमें लगता है कि हम जो सोच रहे हैं, कर रहे हैं वही सही है। हमारे माता–पिता एवं बुजुर्गों ने

स्वयं भुक्त भोगी होकर जो अनुभव किये हैं वे उन्हें साझा कर हमें लाभ प्रदान करना चाहते हैं और उनकी बातों की हम अवहेलना करते हैं।

इसी से सम्बन्धित बचपन में सुनी एक कहानी मेरी स्मृति में आ रही है जिसे मैं आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मनुष्यों की बस्ती से दूर एक बहुत विशाल हरा–भरा पेड़ था उस पर बहुत सारे हंस रहते थे, उसमें एक बहुत बुजुर्ग व अनुभवी हंस था। वह बुद्धिमान होने के साथ–साथ दूर–दर्शी भी था। सब उसको ताऊ कहकर उसका सम्मान करते थे। एक दिन उसने एक नन्हीं सी बेल को पेड़ के तने पर बहुत नीचे लिपटते पाया। ताऊ ने दूसरे हंसो को बुलाकर कहा कि देखो इस बेल को नष्ट कर दो, एक दिन यह बेल हम सबको मौत के मुंह में ले जायेगी। उसमें एक जवान युवा हंस ने हंसते हुए कहा कि ताऊ यह छोटी सी बेल हमें कैसे मौत के मुंह में ले जायेगी? सयाने हंस ताऊ ने समझाया, आज यह तुम्हें छोटी सी लग रही है, धीरे–धीरे यह पेड़ के सारे तनों पर लपेटा मारकर ऊपर तक आयेगी। फिर बेल का तना मोटा होने लगेगा और पेड़ के तने से लिपट जायेगा।

तब नीचे से ऊपर तक पेड़ पर चढ़ने के लिये सीढ़ी सी बन जायेगी, कोई भी शिकारी उस सीढ़ी के सहारे चढ़कर हम तक पहुँच जायेगा और हम मारे जायेगें। दूसरे हंस को यकीन नहीं हुआ कि एक छोटी सी बेल कैसे सीढ़ी बनेगी?

तीसरा हंस बोला ताऊ तू तो एक छोटी सी बेल को खींच कर ज्यादा ही लम्बा कर रहा है। एक हंस बड़बड़ाया, यह ताऊ अपनी अक्ल का रौब डालने के लिये अंट–शंट कहानी की परिकल्पना कर रहा है। इसी प्रकार अन्य हंसों ने भी ताऊ की बात को गम्भीरता से नहीं लिया। समय बीतता रहा, बेल लिपटते–लिपटते वृक्ष की ऊपरी शाखा तक पहुँच गयी। बेल का तना मोटा होना शुरू हुआ और सचमुच ही पेड़ के तने पर एक सीढ़ी सी बन गयी, जिस पर आसानी से चढ़ा जा सकता था। अब कल की छोटी–पतली सी बेल इतनी मजबूत हो गयी थी कि उस बेल को नष्ट करना अब हंसो के सामर्थ्य के बाहर हो गया था।

एक दिन जब हंस दाना चुगने बाहर गये हुए थे तब एक बहेलिया उधर आ निकला। पेड़ पर बनी लते की सीढ़ी को देखते ही उसने पेड़ पर चढ़कर जाल बिछाया और चला गया। सायंकाल को

सभी हंस लौट कर आये और पेड़ पर उतरे तो सारे हंस बहेलिये के जाल में बुरी तरह फंस गये और फड़फड़ाने लगे, तब उन्हें ताऊ की बुद्धिमानी और दूरदर्शिता का ज्ञान हुआ। सब ताऊ की बात न मानने के लिये लज्जित थे और अपने आप को कोस रहे थे। ताऊ सबसे रूष्ट था और एक दम शान्त बैठा था। एक हंस ने हिम्मत कर के ताऊ से कहा कि ताऊ हम मूर्ख हैं हमसे मुँह मत फेरो। दूसरा हंस बोला कि ताऊ आप ही हमे इस मुसीबत से बचा सकते हैं। तीसरा हंस बोला ताऊ हमारे प्राण संकट में हैं हमें क्षमादान कर के हम लोगों के प्राणों की रक्षा कीजिये। सभी हंसों ने उसकी हाँ मे हाँ मिलाते हुए इस संकट से छुटकारा दिलाने की मिन्नतें करने लगे। ताऊ ने पूछा कि सब लोग मेरी बात मानोगे सभी हंसों ने एक स्वर में कहा कि हाँ हम लोग तुम्हारी सभी बात मानेगें, कृपया इस संकट से छुटकारा दिलाइये। तब ताऊ हंस ने कहा मेरी बात को सभी लोग ध्यान से सुनो। सुबह जब बहेलिया आयेगा तो सब लोग मुर्दा होने का नाटक करना। बहेलिया मरा हुआ समझ कर तुम्हें जाल से बाहर निकाल कर जमीन पर रखता जायेगा वहाँ पर भी सब मरे समान पड़े रहना। जैसे ही वह अन्तिम हंस को नीचे रखेगा मै एक सीटी बजाऊँगां । मेरी सीटी सुनते ही सब एक साथ उड़ जाना। सुबह बहेलिया आया, सभी हंसों ने वैसा ही किया जैसा ताऊ हंस ने बताया था। सचमुच बहेलिया हंसों को मृत समझ कर झुझलाहट के साथ जमीन पर पटकता गया। अन्तिम हंस को बहेलिये द्वारा जमीन पर पटक दिये जाने पर ताऊ हंस ने सीटी बजाई, सीटी की आवाज के साथ ही सभी हंस एक साथ उड़ गये। बहेलिया विस्मित होकर यह देखता रह गया। अपने अनुभव के चलते ताऊ हंस ने सभी हंसों की जान बचाई।

हमारे बड़े बुजुर्ग परिवार की शान हैं वह हमें समय–समय पर समझाते रहते हैं, अपने अनुभव से सही–गलत का अन्तर बताते रहते हैं, वह हमारी चिन्ता करते हैं इसी लिए समय–समय पर गलत राह पर देखकर हमें टोकते रहते हैं जो हमे अच्छा नहीं लगता, जब कि हमें उनके अनुभव, प्यार और आशीर्वाद की बहुत जरूरत रहती है। हमें अपने बड़े बुजुर्गों को प्यार एवं सम्मान करना चाहिए। जिस परिवार में बड़े बुजुर्गों का सम्मान होता है उस परिवार में कभी कोई भंयकर दुःख नहीं आता। बच्चे अपने से बड़ो का आदर व सम्मान करना सीख जाते हैं।

वर्तमान में ज्यादातर लोग बड़ों की संगत में न रहने के कारण एवं एकल परिवार के कारण

नित्य नई समस्याओं से ग्रसित होते जा रहे हैं जिसके कारण हम मानसिक अवसाद (डिप्रेशन) में चले जा रहे हैं। चिन्ता के कारण अनेकों रोग हो रहे हैं। भरे पूरे संयुक्त परिवार में हंसी–खुशी का वातावरण रहता है बच्चों की संख्या ज्यादा होने से वे आपस में खेलते कूदते हुए अपने आप स्वस्थ रहते हैं एवं समाजिक जीवन जीने के योग्य बनते हैं। एक दूसरे पर भरोसा रहने से हमें चिन्ता नहीं रहती हम अवसाद में नहीं जाते। आरोग्य रहकर सुख का भोग करते हैं।

यदि हमें रोग मुक्त व सुखी होना है तो एकल परिवार की जगह संयुक्त परिवार में रहना चाहिये और अपने बड़े बुजुर्गों के साथ समय व्यतीत करना चाहिये। इस कार्य से हमे असीम शान्ति मिलेगी, नींद भरपूर आयेगी जिससे हम स्वस्थ रहेगें।

प्रत्यक्ष उदाहरण शिक्षा का सर्वोत्तम माध्यम है। हमारी संताने हमें अपने माता–पिता के साथ जो व्यवहार करता देखेगीं उसका अनुकरण करते हुए हमारे साथ वैसा ही व्यवहार करेंगी।

इस उपर्युक्त विवरण से यह ज्ञान मिलता है कि हमें अपने माता–पिता व बुजुर्गों का सम्मान करना चाहिये।

प्रकृति की धरोहर पर्यावरण

एस0 बी0 सिंह

पर्यावरण का सम्बन्ध उन जीवित और गैर जीवित चीजों से है जो कि हमारे आस–पास मौजूद हैं और जिनका होना हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसके अन्तर्गत वायु, जल, मिट्टी, जंगल, मनुष्य, पशु–पक्षी आदि आते हैं।

हमारा जीवन पूर्णतः प्राकृतिक संसाधनों पर ही निर्भर है। हम लोगों ने प्राकृतिक स्थानों जैसे जंगल, रेगिस्तान, पहाड़, नदी आदि स्थानों को इमारतों, सड़कों, कारखानों आदि के रूप में उपयोग किया है और करते जा रहे हैं। अपना भोजन, ईंधन, वस्त्र, औषधि एवं अन्य दैनिक उपयोगी वस्तुएं भी किसी न किसी रूप में प्रकृति से ही प्राप्त करते हैं परन्तु उसके संरक्षण व विकास के लिए प्रयास करना या सोचना एक सपना है। हमें प्राकृतिक वातावरण के विनाश और दोहन के रोकथाम के लिए आवश्यक उपाय करने की जरूरत है।

पूर्वजों के इतिहास के पन्नों को पलटा जाये तो देखने को मिलता है कि हमारे पूर्वज पर्यावरण संरक्षण के प्रति काफी उदार थे। और चिन्तित रहकर पर्यावरण बचाने का पूरा प्रयास भी किया था जैसेः– सुन्दर लाल बहुगुणा ने वन्य संसाधनों की सुरक्षा के लिए ''चिपको आन्दोलन'' की शुरूआत की थी, मेधा पाटेकर ने जन जातीय लोगों की पर्यावरण सुरक्षा हेतु नर्मदा नदी पर बन रहे बांध के लिए आन्दोलन किया था। इस प्रकार हम लोग भी कुछ छोटे–छोटे उपायों द्वारा प्रकृति को बचाने में अपना सहयोग कर सकते हैं जैसेः–

1. रिड्यूस, रिसाइकिल, रियूज करके ।

2 ऊर्जा बचाने के लिए ट्यूबलाइट, सीएफएल, एल0ई0डी0 आदि का उपयोग करके।

3. जीवाश्म ईंधन की खपत कम करने हेतु आने–जाने के लिए पैदल, साइकिल, कार पूल या सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करके।

4. पुनः उपयोग की जाने वाली बैट्री एवं सोलर पैनल का उपयोग करके।

5. रासायनिक उर्वरकों की जगह गोबर की देशी खाद, जैविक खाद एवं कम्पोस्ट खाद आदि का उपयोग करके।

पर्यावरण को बचाने के लिए कुछ सरल उपाय निम्न हैंः–

1. कम से कम 500 मीटर तक की यात्रा को पैदल या साइकिल से तय करें बहुत से लोग तो सौ कदम जाने के लिए भी बाइक या स्कूटी का इस्तेमाल करते हैं।

2. आर०ओ० या वॉटर प्यूरीफायर का वेस्ट वॉटर फालतू न बहने दें बल्कि उसका उपयोग बर्तन धोने, कपड़ा धोने, घर की सफाई करने, पौधों की सिंचाई आदि में उपयोग करें।

3. कमरे से निकलते समय कमरे की लाइट, फैन, कूलर, ए0सी0 आदि बन्द करके निकलें।

4. वॉश बेसिन के टैब का फ्लो कम करके उपयोग करें।

5. अपनी कार, बाइक, स्कूटी में शॉपिंग बैग रखकर चलें।

6. घर या पार्टी आदि में खाना खाते समय उतना ही खाना लें जितना कि आप आसानी से खा सकते हैं। ज्यादा परोस कर खाना व्यर्थ न होने दें।

7. इस बात को समझिये कि पैसा तो आप का है, परन्तु संसाधन प्रकृति के हैं। इसलिए पैसे का दुरुपयोग करके प्राकृतिक संसाधनों को जाया न होने दें।

8. यूज एण्ड थ्रो का प्रयोग न करके यूज एण्ड रियूज होने वाली सामग्री का प्रयोग करें।

9. एक बाल्टी पानी से नहाने की आदत डालें और अमूल्य जल को बचायें।

10. हमने जो गलतियां की वह गलती हमारे बच्चे न करें। इसके लिए हमें शुरू से ही पर्यावरण बचाने और उसके महत्व के बारे में उनको सिखाने की जरूरत है किः–

1. नहाते या ब्रश करते समय पानी का दुरूपयोग न होने दें।

2. शयन कक्ष या अध्ययन कक्ष से बाहर निकलते समय लाइट, फैन, कूलर, ए0सी0 बन्द करके निकलें।

3. जहां पैदल या साइकिल से जा सकते हों वहां बाइक या स्कूटी का प्रयोग न करें और जहां बाइक या स्कूटी से जा सकते हों वहां कार का प्रयोग न करें।

4. घर का कूड़ा–कचरा सड़क पर न फेंके और न ही जलायें।

प्रतिवर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस आता है। इसलिए आइये हम सब मिलकर संकल्प करें कि प्रकृति और पर्यावरण को बचाने के लिए आज से ही हर संभव प्रयास करेंगे।

'सफलता के सही मायने'

मनीष कुमार विश्वकर्मा

बात उन दिनों कि है जब मेरी और देव की नयी नयी नौकरी लगी थी, मेरे दोस्त देव के पिता जी उसकी इस साधारण सी नौकरी से खुश नहीं थे दरअसल वो उसको किसी multination company में इंजीनियर के रूप में काम करते हुए देखना चाहते थे। एक बार मैं ट्रेन से घर (वाराणसी) जा रहा था रास्ते में लखनऊ junction पर मुझे देव मिल गया वो अपने पिताजी के साथ किसी शादी के सिलसिले में वाराणसी जा रहा था। देव ने शादी में जाने के लिये अपने पिताजी को नया कुर्ता दिया था पर उसके पिताजी शायद इससे खुश नहीं थे शायद वो उसके MNC में काम करने पे खुश होते इस कारण देव पिताजी के साथ चुपचाप बैठा हुआ था।

ठण्ड का मौसम था तभी हमारे कानों में चाय चाय की आवाज सुनाई दी । एक 15 साल का लड़का उस बोगी में चाय बेच रहा था। सामने बैठे एक बुजुर्ग ने उसकी ओर देखकर कहा आज कल बेरोजगारी बहुत बढ़ गयी है। मैं upper berth पर बैठकर mobile चला रहा था पर नेट न आने की वजह से उनकी बातें सुनने लगा। उस बुजुर्ग ने देव के पिताजी की ओर देखकर पूछा आपका बेटा क्या करता है पिताजी ने कहा नौकरी करता है। india में या foreign में बुजुर्ग का अगला प्रश्न था। जी लेखपाल है लखनऊ में, देव के पिताजी ने दबी आवाज में कहा। इसके बाद बुजुर्ग ने अपने बारे में बताना शुरू किया वो रिटायर क्लर्क हैं उनके दो बेटे हैं जो अमेरिका में किसी multination कम्पनी में काम करते हैं और एक बेटी जो newzeland में settle है। वो जैसे जैसे अपने बच्चों के बारे में बताये जा रहे थे देव के पिताजी देव को हीन दृष्टि से देखे जा रहे थे। बनारस का होने की वजह से मैने बुजुर्ग से पूछा कि uncle आप वाराणसी में कहाँ रहते हो तो उन्होंने बताया की वो लखनऊ में आधार homes में रहते हैं और वाराणसी में पेंशन के काम से जीवित प्रमाण पत्र लेने जा रहे हैं। देव के पिताजी जो काफी देर से उनकी बातें सुन रहे थे उन्होंने उस बुजुर्ग से कहा की थोड़ा मेरे इस नालायक बेटे को भी कुछ सिखाइये ताकि ये भी मेहनत कर आपके बेटों की तरह अच्छी जॉब कर सके। अब तक वाराणसी station आ गया था उस बुजुर्ग ने देव की ओर देखा और कहा आपका बेटा मेरे बेटों से अच्छा है ये कहकर वो ट्रेन से नीचे उतर गये। देव के पिता को थोड़ी देर कुछ समझ नहीं आया, जब बात समझ आयी तो उन्होंने देव को गले से लगा लिया।

दरअसल आधार homes वृद्धाश्रम है।

ईश्वर की शक्तियाँ (मेरी नजर से)

भूपेन्द्र सिंह नेगी

पूर्व के लेखों में मैंने ईश्वर के बारे में अपनी धारणा के सम्बन्ध में लिखा था कि यह एक चेतन उर्जा, (कन्शास एनर्जी) है, जो एक बहुत बड़े गोलाकार रूप में ब्रह्माण्ड में कहीं पर स्थापित है, एवं वहीं से उसकी उर्जा चारों तरफ निकलती है, जैसे सूरज की किरणें चारों तरफ फैलती हैं एवं उचित वातावरण पाकर जीव–जन्तु पेड़–पौधों के रूप में विकसित होती है।

ईश्वर के गुण के सम्बन्ध में लिखा था कि यह केवल भावनाओं को महसूस करती हैं एवं हमारी भावनाओं को ही प्रभावित करती है। इसमें हमारी तरह बुद्धिमत्ता एवं सोचने–समझने की क्षमता नहीं है।

हम अपने दैनिक जीवन में विभिन्न ऊर्जाओं की शक्तियों एवं उनके उपयोग देख रहे हैं। जैसे बिजली की ऊर्जा को विभिन्न तरह से उपयोग कर बल्ब, पंखे, हीटर, मोटर वगैरह चलाते ही है, इलेक्ट्रो–मैग्नेटिक शक्तियों से टी0वी0, मोबाईल, रेडियो जैसे उपकरण आज हमारे जीवन में सम्भव हो पाये हैं। पेट्रोल के शक्तियों के सही उपयोग से हमें हर प्रकार के वाहनों का सुख मिल पा रहा है। आग की शक्तियों से खाना बगैरह बनाते हैं।

इसी प्रकार ईश्वर की शक्तियों का सही तरह से उपयोग करना सीख पाये तो हम भी बहुत प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त कर सकते हैं। इसके सबसे अधिक उदाहरण हमारे देश के कई ऋषि–मुनि एवं साधु–सन्त हैं। हम लोगों ने सुना होगा एवं कई लोगों ने प्रत्यक्ष देखा भी होगा। हम साधु–सन्तों की अलौकिक शक्तियों को जैसे पानी में चलना, एक ही समय पर दो जगह पर दर्शन होने, वगैरह–वगैरह। इसके पीछे वही कारण है कि उन्होंने इन शक्तियों को अपने अन्दर विकसित करने

का तरीका सीखा एवं विकसित किया। यहाँ पर एक बात बताना चाहूंगा कि ऐसी शक्ति प्राप्त करने मात्र से कोई व्यक्ति असाधारण नही हो जाता है। जैसे कोई व्यक्ति सही कसरत, खान–पान से अपने शरीर को हट्टा–कट्टा एवं ताकतवर बना देता है, फिर भी वह एक आम इन्सान ही कहलायेगा। कोई बहुत ज्ञान अर्जित करता है, कोई धन अर्जित करता है, कोई खेल में या सामाजिक कार्य में या अभिनय में नाम कमाता है। हम प्रकार इनकी उपलब्धियों को तो असाधारण कहा जा सकता है पर व्यक्ति रूप में ये सब हम–आप जैसे ही हैं। इसी प्रकार साधु–सन्तों की अलौकिक शक्तियों को केवल उनकी उपलब्धि माना जाय जो साधारण से अधिक है। पर व्यक्ति रूप में हम जैसे ही साधारण हैं।

मृत्यु के पश्चात क्या हमारी आत्मा एक स्वतन्त्र इकाई के रूप में रह पाती है, या फिर वह चेतन–शक्ति में विलीन हो जाती है। इससे पहले हम प्रकाश की प्रकृति के बारे में सोचे।

यह द्वैत प्रकृति का है–

(1) तरंग प्रवृत्ति का

(2) कण–प्रकृति का।

तो अगर चेतन–शक्ति को भी इसी प्रकार द्वैत प्रकृति का मानें, तो हम अपनी आत्मा को कण प्रकृति का मान लें, जो अपने आप में एक स्वतंत्र रूप में इस शक्ति में अवस्थित है।

क्या मृत्यु के पश्चात प्रेत, प्रेतात्मा वगैरह का वजूद हो सकता है। इस सिद्धान्त के आधार पर कहा जा सकता है कि कुछ आत्मायें मृत्यु के पश्चात सांसारिक मोह–माया न छोड़ पाने के कारण अपने चारों तरफ की ऊर्जा का उपयोग कर अपने शरीर के रूप को बना पाने में सक्षम हो सकते हैं।

जय भवानी

हिन्दी पखवाड़ा के अवसर पर अधिकारियों / कर्मचारियों को सम्बोधित करती हुई महालेखाकार-प्रथम एवं महालेखाकार-द्वितीय महोदया

स्वतन्त्रता दिवस की कुछ झलकियाँ

स्वतन्त्रता दिवस की कुछ झलकियाँ

कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक

हिन्दी कार्यशाला की कुछ झलकियाँ

हिन्दी पखवाड़ा 2019 की कुछ झलकियाँ

हिन्दी पखवाड़ा 2019 की कुछ झलकियाँ

उत्तर क्षेत्रीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता 2019 की कुछ झलकियाँ

काव्य संगम

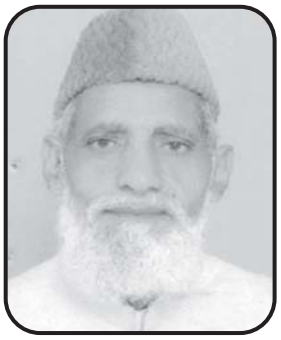

ग़ज़ल

'सगीर अहमद सिद्दीकी

नौ साल की आमद का, हम जश्न मनाते हैं।

इन्सान हैं, इन्साँ को, सीने से लगाते हैं।।

सुख–दुःख के झमेले में, हर आदमी उलझा है।

हर फिक्र–मुसीबत को, हम हँस के भुलाते हैं।।

हर जुल्मों–सितम उनका, है दिल पे गिराँ लेकिन।

मिलता हूँ मुहब्बत से, जब पास वो आते हैं।।

क्या दौर पे आया है, हर सिम्त है तबदीली।

गुलदान में उमरा भी, अब प्याज सजाते हैं।।

सच ये है जमाने में, वो ही हैं धनी भाई।

कम करके जो पेट अपना, औरों को खिलाते हैं।।

है मशविरा मेरा ये, तुम जा के चमन देखो।

किस तरह से गुल, रिश्ता खारों से निभाते हैं।।

है कितना हसीं रिश्ता, दरम्यान मेरे उनके ।

मैं घर को बनाता हूँ, वो आग लगाते हैं।।

किस तरह ये गुलशन पे है दौरे खिजाँ आया।

दहशत से परिन्दे भी, कोहराम मचाते हैं।।

गुलशन ही उजड़ जाए, हर सिम्त हो बद अमनी।

हुक्काम चमन कैसे, कानून बनाते हैं।।

तारीख कहेगी क्या, उनको भी कभी अच्छा?

आवाज जो जनता की ताकत से दबाते हैं।।

पामाल न हो जाये, ये रिश्तए इन्सानी।

हम आज 'सगीर' इतना एहसास दिलाते हैं।।

<u>शब्दावली</u>

नौ = नया

गिराँ = भारी

खार = काँटें

तारीख = इतिहास

उमरा = अमीर लोग।।

मातृशक्ति की पुकार

रवीन्द्र कुमार शर्मा

हे माँ आओ आज धरा पर।
इन पापियों का संहार करो।।
तुम तो रणचण्डी हो माँ।
शुम्भ निशुम्भ पर वार करो।।
तुम तो मौन हुई हो माँ।
इसलिए अत्याचार बढा।।
तुम तो यमदूती हो माँ।
फिर कैसे ये पाप बढ़ा।।
परशुराम का फरसा लेकर।
बलात्कारियों का कत्ल करो।।
नेताओं से कह दो माँ।
तुम राजनीति पर शर्म करो।।
ये मतलबी ये बुजदिल।
ये सारे पत्थर दिल वाले हैं।।
इन नेताओं पर विश्वास न करना।
हे माँ तुम अपना काम करो।
कब तक खूनी सड़को पर हम।
कैंडिल मार्च निकालेंगे।।
इन नन्हे मुन्हे बच्चों को।
कब तक पर्दे मे डालेंगे।।
जिन पापियों ने इनका बचपन लूटा।
माँ तुम उनका सर्वनाश करो।।

हे माँ आओ आज धरा पर।
इन पापियों का संहार करो।।
कहाँ गया मानवा आयोग।
जब बच्ची की जान गयी।।
हैदराबाद के पापियों पर।
वो क्यों इतना हैरान हुई।।
हे माँ कब तक माफ करोगी।
इन पापी हत्यारों को।।
ये पापी लूट रहे हैं इज्जत।
आज सरे आम बाजारों में।।
माँ तुम तब पूजी जाती थी।
जब दोनो हाथों में तलवारें थीं।।
पापी थर–थर काँपते थे।
जब आँखो में अंगारे थी।।
माँ तुम आज शान्त खड़ी हो।
इसलिए ये हश्र हुआ।।
दिखला दो अपना रौद्र रूप।
इन पापियों में कैसे खौफ हुआ।।

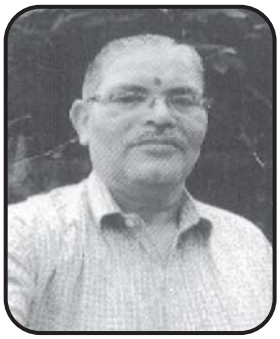

बारिस की बूँदे

देव मणि मिश्रा

नभ से झरती निर्झर बूंदें,
आतप्त प्रकृति हर्षाती है।
होता सिंचित कंठ धरा का
चहुंओर हरीतिमा छाती है।

बारिस की बूंदों के झरते ही,
संतप्त धरा का हृदय तृप्त।
मन मुदित हो गए प्राण सभी
जो थे आतप आकंठ त्रस्त।।

निर्झर झरती बूंदों की धुन,
सोचो ये कुछ कहती लगती।
जीवन संदेश सुनाती जग को
मृतप्राय सृष्टि जागृत करती।

स्मरण कराती मानव को है,
ईश्वर प्रदत्त गुण परोपकार ।
आचरण विमुख हो रहे श्रेष्ठ
क्यों हरते नहीं प्रदूषण

जीवन संरक्षित तभी धरा
जब लेन–देन सब सच्चे हो।
बिना मोल नित रोज ले रहे,
ऋण प्रकृति से जैसे बच्चे

बिना चुकाए मोल प्रकृति का
जो जन्मों से रहा उधार
होंगे माफ कदापि नहीं पर
पीढ़ी दर पीढ़ी चढ़ते भार ।।

दोहन को उद्यत गिद्ध दृष्टि हो
क्या भूल गए सिद्धान्त सृष्टि।
है पापकृत्य संत्राश सुनिश्चित ,
अतिवृष्टि, कुफल या अनावृष्टि ।।

सृष्टि की रक्षा को आतुर अब,
सिद्धान्त समर्पित सब जन हो।
निज स्वार्थ त्याग हित सिद्ध करें,
निर्बाधित स्वास सबल जीवन हो।

है अकाट्य ये तथ्य प्रतिष्ठित,
जीवन संभव बिन वृक्ष नहीं।
अजब पहेली ईश्वर की सब,
नित रोपे वृक्ष सहस्त्र महीं॥

भूलो मत ईश्वर की मर्जी को,
प्रभु कृत्य कल्पना बनी सृष्टि
संरक्षित रोपें वृक्ष वृष्टि हित,
जग पाये जीवन कृपादृष्टि ॥

जग पाये जीवन कृपादृष्टि ॥

॥ मुंबई यात्रा 21.08.2019 के दौरान रचित ॥

माँ

अरूण कुमार श्रीवास्तव

माँ से ही जन्नत

माँ से ही मन्नत

माँ से ही ममता

माँ से ही क्षमता

माँ तू खुदा का फरिश्ता

माँ तू भगवान का करिश्मा

माँ तुझ जैसा न कोई दूसरा

तू सदा रहे संग

यही दुआ है मेरी

तू सदा रहे खुश

यही ख्वाहिश है मेरी

तेरे द्वारा किये गए हर

त्याग को शत्–शत् प्रणाम।

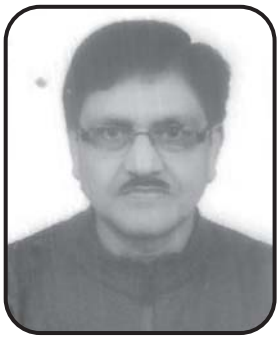

टूट कर बिखरो नहीं

अजय वर्मा

टूट कर बिखरो नहीं,
जुड़ जाओ तुम,
स्त्रोत ऊर्जा के सबल,
बन जाओ तुम।
जर्रा–जर्रा जुड़ के ही,
सृष्टि बनी है।
शक्ति के अवलम्ब,
बन दिखलाओ तुम,
दर्द को अपने दबा कर,
शोला बन जाओ तुम,
कब्र में आलस्य की,
मत सो जाओ तुम।
कर्म के कुरुक्षेत्र में,
डट जाओ तुम।
कर्म से किस्मत तलक,
एक सिलसिला,
बन जाओ तुम,
दर्दों–गम के इस सफर में,
हमसफर बन जाओ तुम।
फूल बन खुशबू बिखेरो,
प्यार का साहिल बनो तुम।
टूट कर बिखरो नहीं,
जुड़ जाओ तुम।

चित्र

पुष्पा मिश्रा

कुछ श्वेत श्याम चित्र
पुराने काले पन्ने वाले एलबम में
जीवंत हो उठी स्मृतियां
कितनी सादगी, सुकून था
उस दौर में
छोटी–छोटी बातों में
ढूंढते थे हम खुशियाँ
रिश्तों को सहेजते थे
सींचते थे, प्रेम से, धैर्य से
चित्र भी अजीब होते हैं
सजीव से हो उठते हैं
इक ऊष्मा सी संचारित करते हैं
बाल कौतुहल सा ही तो है
उन चित्रों में स्वयं को ढूंढना
जैसे खुद को पहचान ही नहीं पा रही
या शायद वक्त ने बहुत कुछ बदला है ।

चित्रों की वर्तमान में
प्रासंगिकता प्रश्नचिन्ह सा लगाती
''सेव" और "डिलीट'' बटन का विकल्प
क्या अंतःस्मृतियों से लुप्त कर पाता है?
जैसे ''रिश्ते" जो सुख–दुःख साथ जीते हैं
वो क्यूं साथ छोड़ते हैं
क्यूं सिर्फ "सेव'' का विकल्प ही नहीं होता?
अनगिनत से प्रश्न !
मैं चित्रों को कस के पकड़ना चाहती हूँ
डर सा लगता है, कहीं ये भी न छूट जाये!

बेटियाँ

शिवम यादव

हैं बेटियाँ अनमोल उनका मोल नहीं होता।
मिला हो आशीर्वाद तो उसका तौल नहीं होता।।
ऐ मेरे देश के लोगों रखना बेटियों को सम्भाल के
इनके बिना घर में खुशी का माहौल नहीं होता।
होती हैं बहुत नरम, रोता है कोई तो उसे गले लगा लेती हैं।।
घर में रूठा हो कोई तो उसे मना लेती हैं।
न जाने कैसा होता है इनका दिल, हो खुद को कोई दुःख दर्द तो हँस के छुपा लेती हैं।
ये तो भारत की बेटियाँ हैं, गैरों के भी दुःख दर्द को अपना लेती हैं।
क्या है कोई इनसे भी शिकायत या कोई गिला है।
अरे कठोर तो वही हैं जो बेटियों से नहीं मिला है।
कभी कल्पना बनी है, कभी कृपलानी बनी है।
छुड़ाये अंग्रेजों के छक्के ये वो मर्दानी बनी है।
सुना होगा पी0टी0 ऊषा का नाम जो दिन–रात मैदानों में पसीना बहाती है।
देकर शिकस्त विपक्षियों को विदेशों से स्वर्ण पदक ले आती है।
भारत का मान बढ़ाती है।
सुरो की सरताज हैं। मंगेशकर जी अपनी आवाज से वतन से वतन को रंग देती हैं।
शक न करो बेटियों की योग्यता पर ये बनकर प्रतिभा राष्ट्रपति पद तक जाती हैं।
ऐसी ही बेटियाँ भारत देश का सम्मान बढ़ाती हैं।

शहीद चन्द्रशेखर आजाद पार्क एवं संगम

राजेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

(1)

अरे भइया! बहुत दिनों बाद दिख रहे हो,
लगता है आप मार्निंग वाक में रेगुलर नहीं हो
पता है न ''सुबह की हवा लाख टके की दवा''
वॉकर्स परिचित हो या अपरिचित,
सभी एक दूसरे को निःस्वार्थ भाव से ही प्रतिदिन,
पार्क में आने के लिए प्रेरित करते रहते हैं
वैसे तो हवा चारो तरफ विद्यमान है
परन्तु जो प्राण वायु आक्सीजन युक्त शुद्ध हवा
प्रयागराज के हृदय स्थल पर स्थित,
शहीद चन्द्रशेखर आजाद पार्क में टहलते समय मिलती है
उसकी बात ही कुछ और है।
शहर के हर कोने से मार्निंग वाकर्स
इसकी ओर प्रतिदिन प्रायः भागे चले आते हैं
लगभग घंटे भर की जागिंग, सैर, योगा और
मौज मस्ती करने के उपरान्त अपनी–अपनी
जीवन की सारी चिंताओं से मुक्त होकर,
नई ऊर्जा और स्फूर्ति को साथ लेकर वापस अपने–अपने घर चले जाते हैं।
पार्क, एक निःशुल्क डाक्टर की तरह है जिससे मिलने की तमन्ना,
प्रतिदिन हर शहरी को रहती है।

(2)

राजनैतिक महत्व की इमारतें, ऐतिहासिक धरोहर
खेल–कूद के स्टेडियम, शैक्षणिक संस्थानों से युक्त एवं
नाना प्रकार के फलदार पेड़–पौधे, फूल–पत्तियों वाले,
शहीद आजाद पार्क इस शहर के लिए वरदान है।
पार्क में बाहरी वर्गाकार पथ पर सैर करते समय
आजाद के शहीद स्थली से गुजरते हुए,
वहाँ एक पल के लिए ठहर कर उन्हें नमन करते हैं,
फिर देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर
अपने गंतव्य की ओर वॉकर्स अग्रसर हो जाते हैं
वहीं पार्क के केन्द्रीय भाग में संगीत युक्त फौव्वारे
से उत्पन्न मनमोहक वातावरण, लोगों को इस तरह
सम्मोहित कर लेता है कि उसके चारो तरफ बने हुए
वर्गाकार रास्ते पर टहलते हुए दिन–प्रतिदिन
की सारी उलझनें रफूचक्कर भी हो जाती है।

(3)

गंगा–यमुनी तहजीब का जीता जागता उदाहरण है ये पार्क
जहाँ हर जाति धर्म के लोग पूरे भाई चारे के साथ
बिना किसी भेद–भाव के एक साथ मिलकर
स्वास्थ्य लाभ लेते हुए जीवन का भरपूर आनन्द उठाते हैं।
पार्क इस शहर का दूसरा संगम है, जहाँ प्रतिदिन लोग इस विशुद्ध
नैसर्गिक वातावरण में डुबकी लगाकर उसी आनन्द को पाते हैं,
जो कुम्भ के दौरान संगम में स्नान करने पर मिलता है।
जैसे तमाम बंदिशों और धार्मिक सांस्कृतिक निषेधों के बाद भी
किसी के विचार को कभी दबाये नही जा सकते,
वैसे ही शहीद चन्द्रशेखर आजाद पार्क के अद्भुत वातावरण में,
प्रतिदिन जाने से किसी को रोके नहीं जा सकते।।
एक बार आप भी यहाँ शहीद चन्द्रशेखर आजाद पार्क में
आ करके तो देखिये आप भी इसी के होकर रह जायेंगे।

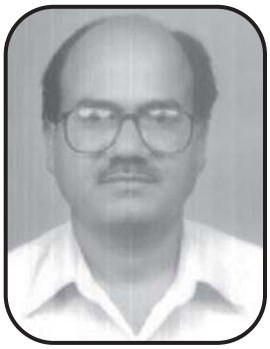

बहादुरशाह जफर (भाग-1)

राजेन्द्र प्रसाद शुक्ला

रंगून से करके आया हूँ सफर।
नाम है मेरा बहादुरशाह जफर।।
मुगलिया सल्तनत का आफताब था मैं।
अट्ठारह सौ सत्तावन की गदर का सरताज था मैं।।
सतारा, नागपुर, झांसी की जो रियासतें लावारिस थीं,
उनके वारिसान बनकर आये थे ये गोरे।
अल्लाहताला ने जिन रियासतदारों को औलादें अता नही की,
उन्हें औलाद देने आये थे ये हरामजादे।
मुफलिसी और गुर्बत से गमजदा जुलाहों
के अंगूठे काटे थे बंगाल में इन्होंने।
मराठा शान के चश्मोचराग नाना साहब की
पेन्शन बन्द करने का फरमान जारी हुआ था।
लखनऊ के नवाब वाजिद–अली–शाह की
साठ हजार की फौज तोड़ दी गयी।
हुकूमत से बरतरफ किया गया था इन्हें,
बदइन्तजामी का इल्ज़ाम लगाया गया था उनके ऊपर।
तिजारत से तख़्त का सफ़र फरेब से हासिल करने वाले
ये फिरंगी दूसरों पर बदइंतज़ामी का इल्जाम आयत करते थे।

हमसे कहा गया हुकूमत से हट जाओ

हुकूमत चलाने का शऊर नही है तुम्हें।

मुगलेआजम शहंशाह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर के वारिस थे हम

हुकूमत कैसे की जाती है हम फिरंगियो से सीखेगें क्या?

कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी मिलाकर हमारा दीन,

ईमान और मजहब सब खा गये थे ये काफिर।

शिकार पर जाते थे ये, शिकार नही खेलते थे।

हमारी बहू–बेटियों की आबरू से खेलते थे ये।

शाही खून था हमारी रगों में हम तैश में थे

भरे दरबार मैनें ऐलान किया मारो इन मक्कारों को।

सूरज की पहली किरन के साथ लालकिला, लोधी रोड, धौला

कुआँ का पूरा का पूरा इलाका बागियों की साँसों से सरगर्म था।

अबला

स्मृति श्रीवास्तव

अबला तुझको कहती दुनिया
नव सृजन का तू आधार
माँ, बेटी, बहन, पत्नी रूप में
तू करती पूर्ण संसार। अबला तुझको–––––

सारे देवता नर व नारी,
कर रहे थे हाहाकार
महिषासुर मर्दन कर देवी दुर्गा
तूने किया जगत कल्याण। अबला तुझको–––––

जग में फैले दुःख हरने को
धरती पर करुणा मूरत
शांतिदूत टेरेसा करती
निस्वार्थ भाव से सेवा का काज। अबला तुझको...

अंग्रेजों के अत्याचारों से
त्रस्त थे जब सब राज्य
रणचंडी बन रानी लक्ष्मी ने
किया वीरता से उनका संहार। अबला तुझको–––––

पुरूषों हेतु भी दुर्गम था

जो अनंत आकाश

भारत की बेटी कल्पना

कर आई विजय अनंत आकाश। अबला तुझको————

पैरों से भी जिस पर्वत पर

चढ़ना था आगम अपार

बिन पाइटों के ही निडर अरुणिमा

चढ़ गई एवरेस्ट महान। अबला तुझको————

परमात्मा की रचना

आनन्द कुमार जैन

एक नन्हा सा दीपक जलता है सारी रात,

प्रकाश देता दूसरों को, खत्म होता है खुद।

एक सदा नीरा नदी, कल कल करके

बहती है सारी जिन्दगी, पेड़ पहाड़

ऊसर बंजर प्यासी धरती, रेगिस्तान

सबको सींचती हुई, प्यास बुझाती हुई।

एक आम का वृक्ष, छाया देता है,

राहगीरों को फकीरों को और

स्वयं धूप में तपता है सारा दिन।

उसे डंडे से मारो फिर भी उसे गुस्सा

नहीं आता, बदले में मीठा फल देता है,

बच्चों को, बूढों को, जवानों को।

हमारी धरती कितनी सहनशील है।

कितनी क्षमावान है, हम गन्दगी फैलाते

हैं धरती पर, मल मूत्र का त्याग

करते हैं धरती पर फिर भी हमारी

धरती माँ फल देती है, फूल देती है

फसले देती है हमें, पेट भरती है हमारा।

परमात्मा की बनायी हुई सारी की सारी

रचना कितनी उदार है कितनी परोपकारी है।।

यह देखकर आश्चर्य होता है हमे।

और हम मनुष्य इतने गिरे हुए हैं कि अगर

कोई हमें सुई चुभोता है तो पलटकर हम

तलवार से उस पर वार करते हैं।

क्या हम परमात्मा की रचना नहीं है?

गजल

राजीव सिंह ''राही''

वो चलते हैं तो रंग–ए–नूर की बारात चलती है।
हम चलते हैं तो बदनामी हमारे साथ चलती है।।
अमीर–ए–शहर हमको इसलिए आँखे दिखाता है।
हम जहाँ भी जाएं हमारी मुफलिसी भी साथ चलती है।।
मै गफलत से घिरा था दुश्मनों में पर बचके निकल आया।
मेरे साथ मेरी माँ की दुआ भी साथ चलती है।।
मुल्क की आबरू से खेलने वालो ये भी सुन लो।
हिफाजत में है मेरे फानूस हवा भी साथ चलती है ।।
उनसे मिलने की तमन्ना भी मुकम्मल न हो सकी।
मेरी तद्वीर से पहले मेरी तकदीर चलती है।।
बस्तियाँ उजालों की बसानी है तुझे एक दिन "राही ।
मोहब्बत की नशीली चाँदनी अब तेरे साथ चलती है।।

दिनांक 01.07.2019 से दिनांक 31.12.2019 के मध्य कार्यालय में नवनियुक्त कर्मचारियों की सूची

क्रमांक	नाम सर्वश्री	पदनाम	व्यक्तिगत संख्या	कार्यभार ग्रहण करने की तिथि	टिप्पणी
01	शिवम कुमार	एम0टी0एस0	जी/3793	02.09.2019	पारस्परिक स्थानान्तरण के आधार पर
02	विकास कुमार साहनी	एम0टी0एस0	जी/3794	03.12.2019	पारस्परिक स्थानान्तरण के आधार पर
03	अजय कान्त यादव	स0ले0अ0	बी/7014	18.09.2019	पारस्परिक स्थानान्तरण के आधार पर
04	मुकेश कुमार	डी0ई0ओ0 ग्रेड ए	के/5601	01.07.2019	पारस्परिक स्थानान्तरण के आधार पर
05	पंकज कुमार वर्मा	डी0ई0ओ0 ग्रेड ए	के/5603	19.12.2019	पारस्परिक स्थानान्तरण के आधार पर
06	अवध नरेश वर्मा	वरि0 लेखाकार	डी/6110	30.12.2019	पारस्परिक स्थानान्तरण के आधार पर

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

क्रमांक	नाम	पदनाम व्यक्तिगत संख्या	निधन दिनांक	कार्यालय
01	कुलदीप सिंह वैस	वरिष्ठ लेखाकार, डी/1969	13.09.2019	लेखा प्रथम
02	पारस नाथ	वरिष्ठ लेखाकार, डी/3423	05.10.2019	लेखा प्रथम
03	मुकेश कुमार	लेखाकार, ई/3641	25.10.2019	लेखा द्वितीय
04	अरूण कुमार श्रीवास्तव	वरिष्ठ लेखाधिकारी, ए/562	25.12.2019	लेखा द्वितीय

दिनांक 01.07.2019 से दिनांक 31.12.2019 के मध्य कार्यालय से सेवानिवृत्त हुए कार्मिकों की सूची

लेखा प्रथम

क्रमांक	नाम सर्वश्री/श्रीमती	पदनाम	व्यक्तिगत संख्या	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.	सर्वजीत	वरिष्ठ लेखाकार	डी/3281	31.07.2019
2.	एस० के० श्रीवास्तव	सुपरवाइजर	सी/559	31.07.2019
3.	महेंद्र कुमार	वरिष्ठ लेखाकार	डी/2182	31.08.2019
4.	ओम प्रकाश	वरिष्ठ लेखाकार	डी/1503	31.08.2019
5.	शौकत आरा सिद्दीकी	लेखाकार	ई/3650	31.08.2019
6.	प्रभात मोहन अधिकारी	वरिष्ठ लेखाकार	डी/2074	30.09.2019
7.	अरुण कुमार	वरिष्ठ लेखाधिकारी	ए/1276	30.09.2019
8.	लीला धर	वरिष्ठ लेखाकार	डी/2067	30.11.2019
9.	अरुण कुमार	वरिष्ठ लेखाधिकारी	ए/1294	30.11.2019
10.	सुरेश प्रसाद	सुपरवाइजर	सी/456	30.12.2019
11.	विपिन विहारी सिंह	वरिष्ठ लेखाधिकारी	ए/1416	30.12.2019
12.	डा0 नित्यनाथ पाण्डेय	वरिष्ठ लेखाधिकारी	ए/1787	30.12.2019

दिनांक 01.07.2019 से दिनांक 31.12.2019 के मध्य कार्यालय से सेवानिवृत्त हुए कार्मिकों की सूची
लेखा द्वितीय

क्रमांक	नाम	पदनाम	व्यक्तिगत संख्या	सेवानिवृत्ति की तिथि
01	श्रीमती श्रावणी दास	पर्यवेक्षक	सी / 1329	31.07.2019
02	श्री सुभाष चन्द्र पाल	वरिष्ठ लेखाकार	डी / 1413	31.08.2019
03	श्री त्रिवेणी प्रसाद	वरिष्ठ लेखाकार	डी / 3222	31.08.2019
04	श्री धर्म राज सिंह	वरिष्ठ लेखाकार	डी / 3442	31.08.2019
05	श्रीमती फुलजेंसिया खेस्स	वरिष्ठ उप महालेखाकार	आई.ए.एंड. ए.एस.	30.09.2019
06	श्री सुभाष चन्द्र	पर्यवेक्षक	सी / 1339	30.09.2019
07	श्री मनोज कुमार गुप्ता	सहा. लेखाधिकारी	बी / 1336	31.10.2019
08	श्री एस.एम. अब्बास जाफरी	सहा. लेखाधिकारी	बी / 1659	30.11.2019
09	श्री फूल चन्द्र भारतीय	पर्यवेक्षक	सी / 455	30.11.2019
10	श्रीमती कुसुमलता श्रीवास्तव	लेखाकार	ई / 2614	30.11.2019
11	श्रीमती पानमती	लेखाकार	ई / 3403	30.11.2019
12	श्री अनिल कुमार	वरिष्ठ लेखाकार	डी / 1761	31.12.2019

रचनाकारों के परिचय

क्र०सं०	रचनाकार का नाम	पदनाम/व्यक्तिगत संख्या	कार्यालय
1.	अनूप कुमार टण्डन	वरिष्ठ लेखाधिकारी	सेवानिवृत्त
2.	सगीर अहमद सिद्दीकी	लेखाधिकारी	सेवानिवृत्त
3.	शशांक त्रिवेदी	एम०टी०एस०, जी/3769	लेखा-प्रथम
4.	यश मालवीय	लिपिक,एफ/1745	लेखा-प्रथम
5.	आकृति कुशवाहा पुत्री अनूप कुमार	वरिष्ठ लेखाकार,डी/3585	लेखा-प्रथम
6.	डॉ० नित्यनाथ पाण्डेय	वरिष्ठ लेखाधिकारी, ए/1787	लेखा-प्रथम
7.	सतीश राय	वरिष्ठ लेखाकार,डी/2551	लेखा-प्रथम
8.	राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल	वरिष्ठ लेखाकार,डी/1848	लेखा-प्रथम
9.	रवीन्द्र कुमार शर्मा	वरिष्ठ लेखाकार,डी/2856	लेखा-प्रथम
10.	मनीष कुमार विश्वकर्मा	लेखाकार,ई/6102	लेखा-प्रथम
11.	भूपेंद्र सिंह नेगी	सहायक लेखाधिकारी,बी/2289	लेखा-प्रथम
12.	अरुण कुमार श्रीवास्तव	वरिष्ठ लेखाधिकारी,ए/2033	लेखा-प्रथम
13.	अजय वर्मा	वरिष्ठ लेखाकार,डी/1921	लेखा-प्रथम
14.	पुष्पा मिश्रा	वरिष्ठ लेखाकार,डी/2527	लेखा- प्रथम
15.	शिवम कुमार	एम०टी०एस०,जी/3793	लेखा- प्रथम
16.	एस०बी० सिंह	वरिष्ठ लेखाकार,डी/2750	लेखा-द्वितीय
17.	राजेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	सहायक लेखाधिकारी,बी/1877	लेखा-द्वितीय
18.	स्मृति श्रीवास्तव	सहायक लेखाधिकारी,बी/6001	लेखा-द्वितीय
19.	आनंद कुमार जैन	वरिष्ठ लेखाकार,डी/2982	लेखा-द्वितीय
20.	राजीव सिंह	वरिष्ठ लेखाकार,डी/1652	लेखा-द्वितीय
21.	देवमणि मिश्रा	वरिष्ठ लेखाधिकारी, ए/228	लेखा-द्वितीय
22.	प्रेमपाल शर्मा	वरिष्ठ लेखाधिकारी, ए/1401	लेखा-द्वितीय
23.	जोखू लाल	वरिष्ठ लेखाकार,डी/3449	लेखा-द्वितीय

''लेखासंगम'' के तेरहवें अंक का विमोचन करते अधिकारीगण

लोक हितार्थ सत्यनिष्ठा

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम एवं द्वितीय
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

मुद्रक द्वाराः राजेश कार्पोरेशन, इलाहाबाद 9415284506